इंग्लैंड की सुप्रसिद्ध लोककथा ROBINHOOD
का सरल हिन्दी रूपान्तर

रूपान्तरकार : श्रीकांत व्यास

4116
334
वि. भा. विद्यालय

शिक्षा भारती, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली, द्वारा प्रकाशित

मूल्य : छह रुपये (6.00)
संस्करण : 1985 © प्रकाशक
Robinhood (Folk Tales)

राबिनहुड

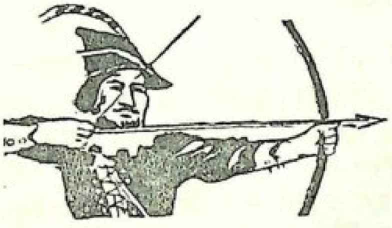

राबिनहुड

कई साल पहले की बात है। इंग्लैंड में एक राजा राज करता था। उसका नाम हेनरी था। उसे शिकार का बड़ा शौक था। उस समय इंग्लैंड में राजा और दूसरे लोगों के लिए शिकार खेलने के बड़े-बड़े जंगल थे। इन जंगलों में राजा और उसके साथियों के अलावा और कोई शिकार नहीं खेल सकता था। अगर कोई बाहरी शिकारी गलती से वहां आ जाता था, तो उसे फौरन कैद कर लिया जाता था। अगर कोई किसी जानवर का शिकार कर लेता था, तो उसे फांसी की सज़ा दे दी जाती थी।

नोटिंगहम शहर के पास एक जंगल पड़ता था, जिसका नाम शेरउड जंगल था। इसी तरह बर्न्सडेल शहर के पास भी एक जंगल था। शेरउड के जंगल की देखभाल के लिए एक आदमी नियुक्त था, जिसका नाम फिटज़ुथ था।

उसके लड़के का नाम राबर्ट था। वह बचपन से ही अपने पिता के साथ जंगल में इधर-उधर घूमा करता था। इसलिए जंगल के पेड़-पौधों और जीव-जन्तुओं को वह अच्छी तरह पहचानने लगा था। जब उसकी उम्र बड़ी हुई तो वह तीर-कमान लेकर जंगल में घूमने लगा। थोड़े ही दिनों में वह बहुत अच्छा निशानेबाज हो गया।

राबर्ट के पिता उसे अक्सर डाकुओं और लुटेरों की कहानियां

सुनाया करते थे। राबर्ट इन साहसपूर्ण कहानियों को सुनकर बहुत खुश होता था। कुछ दिनों के बाद उसके मन में यह इच्छा उत्पन्न हुई कि वह भी क्यों न कुछ हिम्मत से भरे काम करे।

नोटिंगहम शहर के पास ही राबर्ट का चाचा रहता था। चाचा का एक लड़का था। उसका नाम था विल। शेरउड के जंगल से थोड़ी दूर पर हंटिंगटन का एक किला था। हंटिंगटन के अमीर की लड़की मेरियन, विल और राबर्ट बचपन के साथी थे। तीनों अक्सर साथ-साथ जंगल में घूमते थे और खेला करते थे। लेकिन राबर्ट के पिता और मेरियन के पिता दोनों एक-दूसरे के कट्टर दुश्मन थे। लोगों का कहना था कि मेरियन का पिता राबर्ट के पिता को राजा की मदद से दरबार से निकलवाकर खुद अमीर बन बैठा था। बरसों से दोनों में दुश्मनी चली आ रही थी। लेकिन राबर्ट और मेरियन अपने-अपने पिता की इस दुश्मनी की परवाह नहीं करते थे और साथ-साथ खेला करते थे।

नोटिंगहम शहर का कोतवाल और हरफोल्ड का पादरी भी राबर्ट के पिता के दुश्मन थे। हंटिंगटन के अमीर, कोतवाल और उस पादरी ने मिलकर राबर्ट के पिता के खिलाफ राजा के कान भरे थे और उसे दरबार की नौकरी से अलग कराया था।

एक समय की बात है, तब राबर्ट सिर्फ उन्नीस साल का था। जाड़े के दिन थे। कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। एक दिन जंगल का नया रखवाला आया। उसने आते ही राबर्ट के पिता और उसके पूरे परिवार को घर से बाहर निकाल दिया। मौका देखकर नोटिंगहम के कोतवाल ने राबर्ट के पिता के ऊपर झूठा इल्ज़ाम लगाया और उसे कैद कर लिया। राबर्ट और उसकी मां को उस दिन कैदखाने के बरामदे में ठहरने की इजाज़त मिली। लेकिन दूसरे दिन सुबह ही उन्हें वहां से भी भगा दिया गया। और कोई चारा न होने पर उन दोनों को राबर्ट के चाचा के घर शरण लेनी पड़ी।

उन दिनों राबर्ट की मां की तबीयत ठीक नहीं थी। बीमारी

की हालत में उसे जाड़े के दिनों में जंगल में भटकना पड़ा। इससे वह और ज़्यादा बीमार हो गई। दो महीने बाद ही उसकी मृत्यु हो गई। राबर्ट के दुःख की सीमा न रही। लेकिन इतना ही नहीं, थोड़े ही दिनों में उसके पिता की भी कैदखाने में मृत्यु हो गई।

अब राबर्ट अकेला रह गया। उसके चाचा ने अपने बेटे विल को पढ़ने के लिए स्कूल भेज दिया। उधर जब हंटिंगटन के अमीर को यह मालूम हुआ कि राबर्ट और उसकी बेटी मेरियन में दोस्ती है तो उसने मेरियन को रनिवास में रानी की सेवा के लिए भेज दिया। मेरियन लन्दन चली गई। इस तरह राबर्ट बिलकुल अकेला रह गया।

राबर्ट दिन-भर तीर-कमान लेकर अपने चाचा के साथ जंगल में भटकता फिरता था। एक दिन खाना खाते समय चाचा ने उससे कहा, "राबर्ट, तुमने एक बात सुनी है?"

"कैसी बात चाचा?"

चाचा ने कहा, "नोटिंगहम में एक बड़ा भारी मेला लगने वाला है। कोतवाल ने ऐलान किया है कि उस मेले में निशानेबाज़ी और तीरन्दाज़ी का एक दंगल भी होगा। जो आदमी इसमें जीतेगा उसे राजा के जंगल का रखवाला बना दिया जाएगा। इसके अलावा उसे सोने का एक तीर भी इनाम में दिया जाएगा।"

कुछ देर तक सोचने के बाद राबर्ट ने कहा, "चाचा, मैं भी इस दंगल में भाग लूंगा।"

इसके बाद राबर्ट दंगल में भाग लेने की तैयारी करने लगा। घंटों वह तीर चलाने का अभ्यास करने लगा। बड़ी मेहनत से उसने अपने लिए बहुत अच्छे तीर-कमान तैयार किए। इसके बाद एक दिन चाचा से इजाज़त लेकर वह नोटिंगहम के लिए रवाना हो गया।

रास्ते में बहुत घना जंगल पड़ता था। लेकिन राबर्ट को

जंगल के सारे रास्ते मालूम थे। कुछ दूर जाने पर उसने देखा कि जंगल के पहरेदार एक पेड़ के नीचे बैठकर गप्पें मार रहे हैं। इनमें से एक को राबर्ट ने फौरन पहचान लिया। उसीने उसके पिता को नौकरी से निकलवाया था और उसकी जगह खुद जंगल का रखवाला बन गया था।

राबर्ट ने उसे पहचान तो लिया, लेकिन फिर भी उससे कुछ बोले बिना ही वह अपने रास्ते पर चुपचाप चलने लगा। लेकिन उस चौकीदार को मज़ाक सूझा और उसने राबर्ट की ओर इशारा करके कहा, "वाह, देखो कितना बड़ा तीरन्दाज़ जा रहा है! ऐसे बहादुर तो आजकल देखने को नहीं मिलते। क्यों रे, यह टके का तीर-कमान लेकर कहां जा रहा है? कहीं मेले में दंगल लड़ने तो नहीं जा रहा?"

राबर्ट को उसका यह मज़ाक अच्छा नहीं लगा। फिर भी वह बोला, "पहरेदार साहब, इस तरह क्यों कह रहे हो? क्या तुम्हारे तीर-कमान से मेरा तीर-कमान किसी बात में कम है? या कहीं तुम यह तो नहीं सोचते कि तुम मुझसे ज़्यादा अच्छा निशाना मार सकते हो! अगर ऐसा है तो आओ, यहीं देख लिया जाए। देखें, किसका निशाना सच्चा होता है।"

पहरेदार गुस्से से आगबबूला हो उठा। वह फौरन खड़ा होकर बोला, "छोटे मुंह बड़ी बात! तुम्हारा दिमाग तो नहीं खराब हो गया है। अच्छा, मैं बताता हूं, वहां तक अगर तुम तीर मारो तो मैं तुम्हें इनाम दूंगा और अगर नहीं मार सके तो तुम्हारे तीर-कमान छीनकर यहां से भगा दूंगा।"

वहां से करीब दो सौ गज़ की दूरी पर हिरनों का एक झुंड चर रहा था। पहरेदार को लगा कि वहां तक शायद ही इसका तीर पहुंच सके। उसने कहा, "अच्छा लड़के, देख, वे जो हिरन चर रहे हैं, उनमें दाहिनी तरफ को जो हिरन खड़ा है, अगर उसे तू मार सके तो मानूं कि तू सच्चा तीरन्दाज़ है।"

राबर्ट कुछ नहीं बोला। उसने फौरन एक तीर निकाला और

धनुष को कान तक खींचकर तीर चला दिया। पलक मारते ही वह हिरन उछलकर ज़मीन पर गिर पड़ा। तीर उसके पेट में घुस गया था।

यह देखकर पहरेदार के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं। उसके दूसरे साथी भी चकित रह गए। इतने में पहरेदार बोला, "लड़के, तुझे मालूम नहीं कि तूने कितना बड़ा अपराध किया

है। ये राजा के हिरन हैं। इस जंगल में शिकार खेलने वाले को मौत की सज़ा दी जाती है। अगर तुझे अपनी जान प्यारी है तो फौरन यहां से भाग जा, वरना गिरफ्तार कर लिया जाएगा।"

राबर्ट को गुस्सा आ गया। बोला, "क्यों, तुमने ही तो मुझसे कहा था कि हिरन को मार दो, अब उल्टे तुम ही मुझे पकड़े जाने की धमकी दे रहे हो! मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूं। तुमने ही मेरे पिता को नौकरी से निकलवाया था! आज मुझे भी तुमने धोखा दिया है! खैर, किसी दिन तुम्हें इसका जवाब दूंगा!" यह कहकर राबर्ट वहां से चल पड़ा।

जंगल का रखवाला यह सुनकर चौंका। फिर उसने फौरन राबर्ट को निशाना बनाकर एक तीर छोड़ा। लेकिन ऐसा करते समय अचानक उसे एक ठोकर लगी और उसका हाथ हिल गया। राबर्ट बच गया। तीर उसके कान के पास से होकर निकल गया।

राबर्ट फौरन उछलकर एक तरफ खड़ा हो गया और पलक मारते ही उसने भी तीर चलाया। दूसरे ही क्षण रखवाला चीख मारकर ज़मीन पर गिर पड़ा। राबर्ट का तीर उसकी छाती में घुस गया था। देखते-देखते पहरेदार के प्राण उड़ गए। राबर्ट ने अपने पिता के ऊपर हुए अत्याचार का बदला लिया था। लेकिन यह रखवाला राजा का नौकर था। पकड़े जाने पर राबर्ट को फांसी की सज़ा होती। यह सोचकर राबर्ट बहुत घबराया और वहां से निकल भागा। पहरेदार के साथी इतना घबरा गए थे कि पहले तो उनकी समझ में ही नहीं आया कि क्या करें। फिर उनमें से कुछ पहरेदार को उठाने के लिए दौड़े और दूसरे राबर्ट के पीछे लपके। लेकिन राबर्ट उनके हाथ नहीं आ सका। वह तीर चलाता हुआ वहां से भाग निकला।

इसी राबर्ट को उसके साथी प्यार से राबिनहुड कहा करते थे। बाद में सब लोग उसे राबिनहुड के नाम से ही जानने लगे।

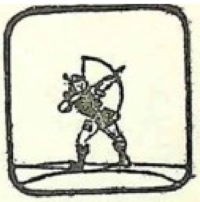

2

जंगल के एक कोने में एक झोंपड़ी थी। वहां एक गरीब विधवा रहती थी। राबिनहुड भागता-भागता उस झोंपड़ी के सामने आ पहुंचा। वह पहले से इस बुढ़िया को जानता था। उसे भागते हुए देखकर बुढ़िया फौरन झोंपड़ी से बाहर आ गई। वह उसको अन्दर ले गई। वहां राबिनहुड ने उसे अब तक की सारी बातें कह सुनाईं।

उसकी बातें सुनकर बुढ़िया बोली, "बेटा, तुम तो बहुत मुसीबत में फंस गए हो। आजकल अमीर और दूसरे बड़े लोग गरीबों को बहुत सताते हैं। ज़रा-ज़रा से अपराध के लिए हमें बहुत कड़ी सज़ाएं दी जाती हैं। सज़ा के डर से गरीबों के लड़के जंगलों में छिपते फिरते हैं और लूट-मार करके किसी तरह अपना काम चलाते हैं। देखो न, मेरे तीन लड़के लुटेरों के साथ हो गए। उनका गुनाह सिर्फ इतना था कि जब उन्हें खाने को कुछ नहीं मिला तो अन्त में मजबूर होकर उन्होंने एक हिरन का शिकार कर लिया। बस, इतने पर ही उन्हें डाकू और लुटेरे करार दिया गया। अब वे घर-बार सब-कुछ छोड़कर जंगल में छिपे-छिपे फिरते हैं। उन्होंने मुझसे बताया कि उनके ही जैसे करीब चालीस आदमी इसी तरह जंगल में छिपकर रह रहे हैं!"

"दादी, वे लोग कहां रहते हैं? मैं उनसे मिलना चाहता हूं!" राबिनहुड ने पूछा।

"मुझे तो ठीक पता नहीं कि वे लोग कहां रहते हैं, लेकिन आज तुम यहीं रह जाओ। रात में मेरे लड़कों से तुम्हारी मुलाकात हो सकेगी। वे लोग आने वाले ही हैं।"

राबिनहुड को बुढ़िया की बात पसन्द आ गई। वह वहीं रह

गया। काफी रात जाने पर उस बुढ़िया के तीनों लड़के उससे मिलने के लिए आए। बुढ़िया ने उन्हें राबिनहुड से भी मिलाया। उन लोगों से मिलकर राबिनहुड को बहुत खुशी हुई। जब बुढ़िया के तीनों लड़कों ने यह देखा कि राबिनहुड उन्हीं की तरह है तो उन्होंने उससे दोस्ती कर ली और अपने गुप्त स्थान का पता बता दिया। उन्होंने उससे कहा, "लेकिन तुम्हें प्रतिज्ञा करनी पड़ेगी कि तुम इसके बारे में और किसी को कुछ नहीं बताओगे!"

"मैं प्रतिज्ञा करता हूं।"

बड़ा भाई बोला, "राबिनहुड, हम लोग अपने दल के लिए एक सरदार की तलाश में हैं। कोई भी आदमी हमारा सरदार हो सकता है। शर्त सिर्फ यही है कि नोटिंगहम के मेले में जाकर जो सबसे दंगल लड़ेगा और सोने का तीर जीत लाएगा, उसे ही हम अपना सरदार बनाएंगे।"

राबिनहुड बोला, "ठीक है, मैं भी नोटिंगहम जा रहा था। मौका निकालकर मैं दंगल में भाग लूंगा। देखें, मुझे तीर मिलता है या नहीं!"

"अगर तुम सबको हराकर सोने का तीर ले आओ, तो हम तुम्हें अपना सरदार बना लेंगे।"

लेकिन राबिनहुड ने तो राजा के नौकर की हत्या की थी, इसलिए वहां वह जा कैसे सकता था? अगर जाता तो सिपाही उसको पकड़ लेते। इसलिए उसने भेस बदलकर वहां जाने का निश्चय किया।

उधर नोटिंगहम शहर में बड़ा भारी मेला लगा था। दूर-दूर से लोग इस मेले में आए हुए थे। तरह-तरह के खेल-तमाशे हो रहे थे। लोग अपना मनोरंजन कर रहे थे। शहर-कोतवाल ने डुग्गी पिटवाकर ऐलान कर दिया था कि जो कोई रावर्ट नाम के लुटेरे को पकड़वा देगा, उसे तीन हज़ार रुपये का इनाम दिया जाएगा, लेकिन लोग मेले की खुशी में इस तरह पागल थे कि उन्होंने कोतवाल के ऐलान की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

नोटिंगहम बड़ा सुन्दर शहर था। उसके आसपास एक बहुत मजबूत चहारदीवारी खिंची हुई थी। पूरा शहर एक किले की तरह लगता था। शहर के दरवाज़े बन्द हो जाने पर अन्दर किसी का घुसना संभव नहीं होता था। सिपाही शहर में घूम-घूमकर पहरा दे रहे थे। उन्हें भी कोतवाल ने इनाम देने का वादा कर रखा था। शहर में आने वाले हर नये आदमी को सिपाही गौर से देखते थे और उसका पीछा करके यह जानने की कोशिश करते थे कि कहीं यह राबर्ट तो नहीं है। राबिनहुड के पिता से शहर-कोतवाल नाराज़ था, इसका बदला वह राबिनहुड से लेना चाहता था।

इस मेले में कई तरह के दंगल होने वाले थे, जिनमें से एक निशाने पर तीर मारने का भी दंगल था। इन दंगलों को देखने के लिए बहुत बड़ी तादाद में लोग आए हुए थे। दूर-दूर के नामी तीरन्दाज़ इसमें भाग लेने के लिए आए थे। इनमें एक भिखारी भी था। उसके शरीर पर बहुत फटे-पुराने कपड़े थे। पैरों में फटे हुए जूते थे और सिर पर पीले रंग का एक बड़ा भारी टोप था। उसका चेहरा बड़ा बदसूरत था। वह लंगड़ाकर चलता था। उसे देखकर हंसी छूटती थी।

यह राबिनहुड ही था, जो भिखारी का भेस बनाकर दंगल में भाग लेने आया था। उसके साथ एक आदमी और था जो काफी तगड़ा था और जिसने अपनी आंखों पर लाल पट्टी बांध रखी थी। दोनों ने कब शहर में प्रवेश किया, इसका किसी को पता नहीं था। सिपाहियों को भी कोई शक नहीं हुआ कि ये दोनों कौन हैं।

दंगल के मैदान में हज़ारों आदमियों की भीड़ थी। बीच में ऊंचे मंच पर शहर-कोतवाल अपनी लड़की के साथ बैठा था। कोतवाल के पास बड़ा पादरी भी बैठा हुआ था। कोतवाल के दाहिनी तरफ एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री बैठी थी। वह मेरियन थी। मेरियन को देखकर राबिनहुड की खुशी की सीमा न रही।

तुरही बजी और दंगल शुरू हो गया। कुछ दूर पर लकड़ी

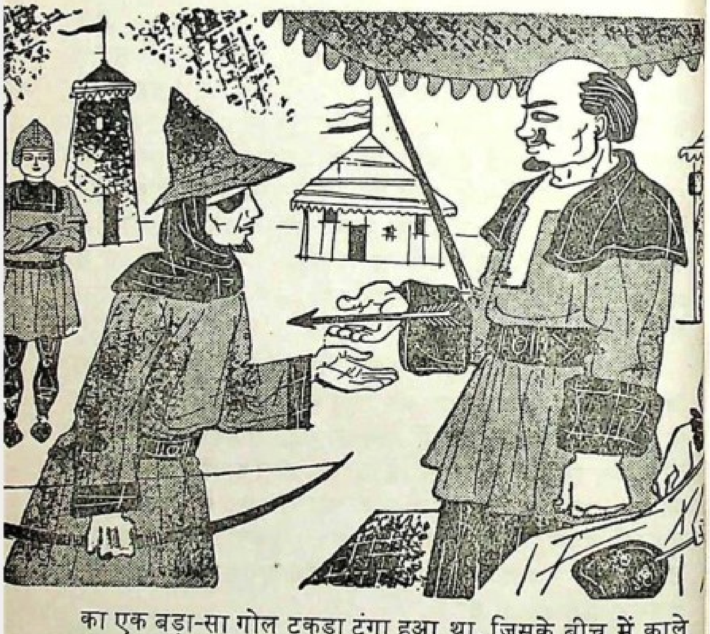

का एक बड़ा-सा गोल टुकड़ा टंगा हुआ था, जिसके बीच में काले रंग का एक चक्र बना था। चक्र के ठीक बीच में एक छोटा-सा सफेद निशान था। इसी निशान पर तीर मारना था। बारी-बारी से सभी तीरन्दाज़ निशाने लगाने लगे। सिर्फ बारह आदमियों के तीर निशाने पर ठीक पहुंचे। उस भिखारी और उसके साथ के उस युवक के तीर, जिसने अपनी आंखों पर लाल पट्टी बांध रखी थी, बड़ा सफाई से छेद को पार कर गए। यह देखकर लोगों ने खुशी से तालियां बजाईं।

इसके बाद दूसरे निशाने पर तीर मारना था। यह साठ गज दूर था। इस बार सिर्फ पांच तीरन्दाज ही निशाने पर तीर मार सके। इस बार भी भिखारी और उसके साथी ने बड़ी सफाई से तीर चलाए। जो लोग पहले भिखारी को देखकर उसका मज़ाक

बना रहे थे, अब वे लोग उसकी तारीफ करने लगे।

अब तीसरा दौर शुरू हुआ। इस बार निशाना बहुत दूर रखा गया था। पांचों तीरन्दाज़ों ने एक के बाद एक निशाने पर तीर मारे। पहले कोतवाल, हंटिंगटन के ज़मींदार और पादरी के तीरन्दाज़ों ने निशाने पर तीर मारे, लेकिन किसी का तीर काले निशान पर नहीं पड़ा। इसके बाद राबिनहुड की बारी आई।

पलक मारते ही उसका तीर निशाने के ठीक बीच में जा लगा। देखने वाले खुशी से चीख पड़े। उन्होंने तालियां बजाकर उसका स्वागत किया।

इसके बाद उस युवक की बारी आई जो आंखों पर पट्टी बांधे हुए था। उसने हवा का कोई ख्याल नहीं किया और तीर चला दिया। तीर निशाने पर नहीं बैठ सका।

पांचों तीरन्दाज़ों में जीत सिर्फ राबिनहुड की रही।

आंखों पर पट्टी बांधे हुए युवक ने कहा, "भई, मेरा तीर निशाने पर नहीं बैठ सका, जीत तुम्हारी हुई। मुझे हारने का कोई अफसोस नहीं। तुम्हें सोने का तीर इनाम में मिलेगा, यह सोचकर मुझे बड़ी खुशी हो रही है। जाओ, अब तुम इनाम ले लो!" यह कहकर वह लोगों की भीड़ में गायब हो गया।

इसके बाद कोतवाल का एक नौकर आगे बढ़ा। वह राबिनहुड को कोतवाल के पास ले गया। कोतवाल बोला, "तुम तीरन्दाज़ों के उस्ताद मालूम होते हो। तुम्हारा नाम क्या है?"

राबिनहुड बोला, "हुजूर, लोग मुझे रोब कहते हैं।"

"रोब, अच्छा नाम है! यह भी कोई नाम हुआ! खैर, यह लो सोने का तीर। आज के दंगल में विजयी होने के कारण तुम्हें यह इनाम में दिया जाता है।"

राबिनहुड ने तीर ले लिया। फिर वह मेरियन के पास पहुंचा और तीर उसे भेंट कर दिया। अब तक मेरियन उसे कुछ-कुछ पहचान गई थी। तीर लेकर वह बोली, "तीरन्दाज़ों के उस्ताद रोब, तुम्हारी इस जीत से मैं बहुत खुश हूं। तीर के लिए

धन्यवाद!"

राबिनहुड ने सिर झुकाकर मेरियन को सलाम किया। फिर वह वहां से चलता बना। कोतवाल को यह अच्छा नहीं लगा। वह मेरियन को चाहता था। वह ईर्ष्या से जलने लगा। उसने फौरन अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि इस आदमी पर कड़ी नज़र रखी जाए, लेकिन राबिनहुड वहां से गायब हो गया।

उसी दिन रात को शेरउड के जंगल में एक जगह चालीस लुटेरे इकट्ठे हुए। वे लोग आग जलाकर उसके पास बैठे थे और किसी का इन्तज़ार कर रहे थे। कुछ देर बाद राबिनहुड वहां जा पहुंचा। उसे देखकर सभी लोग खड़े हो गए। फिर उस बूढ़ी विधवा के तीनों लड़के आगे बढ़े। उन्होंने राबिनहुड से कहा—

"राबिनहुड, आज से तुम हमारे सरदार हुए। तुमने दंगल में दूसरे सारे तीरन्दाज़ों को हराया है। इस समय तुम सबसे बड़े निशानेबाज हो। हम तुम्हारा स्वागत करते हैं। अच्छा, तुम वह सोने का तीर लाए हो?"

राबिनहुड बोला, "सोने का तीर तो मेरे पास नहीं है। लेकिन खैर, कोई बात नहीं, मैं तुम्हारे दल में एक साधारण तीरन्दाज की ही तरह रहूंगा!"

इतने में एक आदमी आगे आया। यह वही युवक था, जिसने अपनी आंखों पर पट्टी बांध रखी थी। वह बोला, "भाई, तुम इस समय दुनिया के सबसे अच्छे निशानेबाज़ हो! एक बहादुर की तरह मैं तुम्हारा स्वागत करता हूं। मैं तुम्हें राबिनहुड के नाम से ही बुलाऊंगा और तुम्हारे अलावा किसी दूसरे को अपना सरदार नहीं मानूंगा। मेरा नाम विल स्टटली है। मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगा और तुम्हारा कहना मानूंगा।"

विल स्टटली लुटेरों में सबसे बड़ा तीरन्दाज़ था। जब उसने इस तरह राबिनहुड का स्वागत किया, तो दूसरे लोग भी खुशी से झूम उठे। सबने राबिनहुड को अपना सरदार मान लिया।

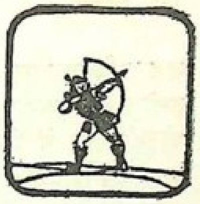

3

कुछ ही दिनों में राबिनहुड की टोली मशहूर होने लगी। लोग उसके बारे में तरह-तरह की बातें करने लगे। कोतवाल ने कई आदमियों को उन्हें पकड़ने के लिए भेजा, लेकिन किसी को सफलता नहीं मिली। लोग लुटेरों के नाम सुनकर ही कांप उठते थे। लेकिन जब उन्होंने देखा कि राबिनहुड के दल के लोग बड़े-बड़े अमीरों और धनवानों को ही लूटते हैं और गरीबों की मदद करते हैं, तो धीरे-धीरे राबिनहुड और उसके साथियों के प्रति उनकी श्रद्धा बढ़ने लगी। लोग उनको सिपाहियों के हाथ में पड़ने से बचाने लगे। यही नहीं, बहुत-से नये नौजवान भी राबिनहुड के दल में शरीक होने लगे। धीरे-धीरे उसकी टोली बढ़ती गई।

इस तरह कुछ दिन बीते। राबिनहुड को यह कुछ अच्छा नहीं लगा कि रात-दिन जंगल में छिपकर रहा जाए और लूट-मार की जाए। एक दिन उसने अपने साथियों से कहा, "मैं ज़रा शहर हो आऊं, तुम लोग यहीं जंगल में छिपे रहना और मेरी तुरही की आवाज़ पर फौरन चले आना।"

यह कहकर राबिनहुड वहां से चल पड़ा। अभी उसे काफी बड़ा जंगल पार करना था। चलते-चलते वह एक नदी के किनारे पहुंचा। इस नदी को पार करने पर शहर का रास्ता बहुत छोटा हो सकता था। दूसरे किनारे से ही एक पगडंडी जाती थी। वह बहुत जल्दी शहर में पहुंचा देती थी। राबिनहुड ने पास आकर देखा कि बरसात के कारण नदी में बाढ़ आई हुई थी। बड़ी तेजी से पानी बह रहा था। नदी पार करने के लिए एक छोटा-सा पुल था, जिस पर एक बार में सिर्फ एक ही आदमी चल सकता था।

जब राबिनहुड पुल के पास पहुंचा और नदी पार करने लगा तो उसी समय दूसरी तरफ से एक आदमी पुल पार करने लगा। थोड़ी ही देर में दोनों पुल के बीच में पहुंच गए। दोनों एक-दूसरे के सामने खड़े थे। पुल इतना संकरा था कि जब तक दोनों में से एक आदमी वापस लौटकर रास्ता नहीं छोड़ता, तब तक किसी का भी पुल पार करना सम्भव नहीं था।

राबिनहुड को गुस्सा आ गया। वह बोला, "कौन हो जी तुम ? पीछे हट जाओ, मुझे पहले जाने दो !"

वह आदमी हंसने लगा। वह राबिनहुड से ज़्यादा लम्बा-तगड़ा था। वह बोला, "नहीं भाई, मैं तब तक किसी के लिए रास्ता छोड़ने को राज़ी नहीं हो सकता, जब तक कि कोई मुझसे भी ज़्यादा बहादुर आदमी मेरे सामने नहीं आ जाता !"

राबिनहुड और नाराज़ होकर बोला, "ऐसी बात है तो ठीक है; अभी तुम्हें बताता हूं कि कौन बहादुर है !"

वह अजनबी बोला, "ठीक है ! मैं भी तो बहादुर आदमी की खोज में निकला हूं।"

राबिनहुड पीछे लौटा और एक पेड़ की लम्बी-सी डाली काटकर पुल पर आ खड़ा हुआ।

"अच्छा, तैयार हो जाओ। तीर-धनुष से लड़ना ज़्यादा अच्छा होता, लेकिन कोई बात नहीं, आओ, तुम्हें लाठी के ही दो-चार हाथ दिखा दूं !"

उस अजनबी के पास पहले ही एक डंडा था। राबिनहुड तैयार हो सके, उसके पहले ही उसने उस पर वार कर दिया। लेकिन राबिनहुड उछलकर किसी तरह बच गया। इसके बाद फिर दोनों एक-दूसरे से भिड़ गए। वह अजनबी बहुत ताकतवर मालूम होता था, लेकिन राबिनहुड भी उतना ही चालाक और फुर्तीला था। वह बड़ी फुर्ती से उछलकर उसके वार से बच निकलता और मौका पाकर उस पर वार कर बैठता था। थोड़ी ही देर में उसने अजनबी के सिर, कन्धे और छाती पर कई

चोटें कीं।

एक बार ज्योंही राबिनहुड ने उस पर वार किया, वह उछल कर बच गया। फिर उसने अपने डंडे से राबिनहुड के सिर पर इतने ज़ोर से चोट की कि राबिनहुड छपाक से पानी में जा

गिरा। अजनबी ज़ोरों से हंस पड़ा। उसने अपना डंडा पानी में आगे बढ़ाकर कहा, "लो, इस लाठी को पकड़ लो, मैं तुम्हें बाहर खींच लेता हूं!"

राबिनहुड ने कसकर उसकी लाठी पकड़ ली। अजनबी ने उसे पानी से बाहर खींच लिया। बाहर आकर राबिनहुड बोला, "तुमने इतने ज़ोर की चोट की कि अभी तक मेरा सिर चकरा रहा है!" यह कहकर उसने अपनी तुरही निकाली और उसे तीन बार बजाया। कुछ ही क्षण में विल स्टटली और उसके दूसरे साथी वहां आ पहुंचे।

एक साथी अजनबी को पकड़ने के लिए आगे बढ़ा। लेकिन राबिनहुड ने उसे रोकते हुए कहा, "नहीं, नहीं, इसको पकड़ो मत। इसका कोई अपराध नहीं है। पहले मैंने ही इस पर चोट की थी। उसके बाद ही इसने अपना हाथ दिखाया। इस तरह हमने आपस में हिसाब साफ कर लिया!" फिर उसने अजनबी से पूछा, "क्यों भई, हिसाब बराबर रहा न?"

वह आदमी बोला, "हां, हां, बराबर रहा! अच्छा, अपना नाम बताओ।"

"मेरा नाम राबिनहुड है।"

"अरे, मुझसे बड़ी गलती हुई। क्या तुम्हारा ही नाम राबिनहुड है? मैं तो तुम्हारे ही दल में शामिल होने के लिए आ रहा था। क्या अब मुझे अपनी टोली में शामिल नहीं करोगे?"

राबिनहुड बोला, "क्यों नहीं! तुम्हारे-जैसे बहादुर और ताकतवर आदमी आसानी से थोड़े ही मिलते हैं! तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम लिटिल जान है।"

ऐसे दैत्य जैसे शरीरवाले आदमी का नाम इतना छोटा-सा होगा, इसका अन्दाज़ किसी को नहीं था। सब लोग हंस पड़े। फिर सबने उसे गले लगाया। उस दिन से लिटिल जान राबिन-ड का सबसेबड़ा दोस्त बन गया।

4176
334

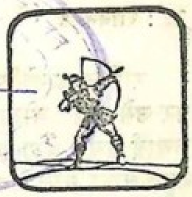

4

एक बार की बात है, राबिन और उसके साथियों ने जंगल में एक हिरन का शिकार किया। जब वे लोग हिरन को उठाने के लिए आगे बढ़े तो अचानक न मालूम कहां से वहां कोतवाल के सिपाही आ धमके। उनकी संख्या लगभग बीस-बाईस रही होगी। राबिन के साथी फौरन ज़मीन पर लेट गए। कुछ लोग पेड़ों के पीछे जा छिपे। सिपाहियों ने तीर चलाना शुरू किया। इधर से भी उसका जवाब दिया गया। देखते-देखते तीन-चार सिपाही ज़मीन पर लेट गए। बाकी वहां से भाग निकले।

सिपाहियों ने जाकर कोतवाल से शिकायत की। यह सुनकर कोतवाल आग-बबूला हो उठा। उसने अपने सिपाहियों को डांट-कर कहा—"क्या, मेरे सिपाही लुटेरों और डाकुओं से डरकर भाग आए! देखता हूं, लुटेरों की हिम्मत बढ़ती जा रही है! उनके लिए कुछ न कुछ करना ही होगा!"

इसके बाद अचानक एक दिन राबिनहुड ने देखा कि उसका साथी लिटिल जान कहीं गायब हो गया है। उसकी बड़ी खोज की गई, लेकिन वह मिला ही नहीं। कई दिन बीत गए, लेकिन जान का पता ही नहीं लगा। राबिनहुड और उसके साथियों को चिन्ता होने लगी कि कहीं लिटिल जान को कोतवाल के सिपाहियों ने तो नहीं पकड़ लिया। बहुत सोचने-विचारने के बाद भी वे किसी नतीजे तक नहीं पहुंच सके। अन्त में राबिनहुड धनुष-बाण लेकर तैयार हुआ और अपने साथियों से बोला, "भाइयो, मुझे ज़रा नोटिंगहम जाना होगा। लगता है, कोतवाल साहब मुझसे मिलने के लिए बेचैन हैं। ज़रा उनसे मिलकर एक बार पता तो लगाऊं कि उन्होंने हमारे लिटिल ज़ान को कहां छिपा रखा है!"

राबिनहुड नोटिंगहम के लिए रवाना हुआ। कुछ दूर जाने पर उसे एक घोड़ागाड़ी दिखाई दी। एक बहुत मोटा-ताजा कसाई उसमें बैठा था और घोड़े को हांक रहा था। गाड़ी में बहुत सारा मांस लदा था। घोड़ा हांफ रहा था, लेकिन फिर भी कसाई उस पर चाबुक फटकार रहा था।

राबिनहुड बोला, "क्यों जी, तुम कहां से आ रहे हो? सारा मांस किसके लिए ले जा रहे हो?"

कसाई बोला, "इससे तुम्हें क्या मतलब? कौन हो तुम? मैं मांस बेचने के लिए नोटिंगहम जा रहा हूं। आज वहां हाट लगी है।"

"मैं ज़रा दूर से आ रहा हूं, मेरा नाम राबिनहुड है!"

राबिनहुड का नाम सुनते ही कसाई मारे डर के कांपने लगा और बोला, "राबिनहुड! आप तो गरीबों के बहुत बड़े मित्र हैं। मैं एक बहुत ही गरीब आदमी हूं। गोश्त बेचकर किसी तरह अपने बाल-बच्चों को पालता हूं।"

"तुम डरो मत, मैं तुम्हें तंग नहीं करूंगा।" फिर राबिनहुड ने अपनी जेब से रुपयों की एक थैली निकाली और उसे कसाई को देते हुए कहा, "लो, ये रुपये लो और अपनी गाड़ी-घोड़ा और वह सारा गोश्त मुझे बेच दो। मेरा कसाई बनकर नोटिंगहम के बाज़ार में गोश्त बेचने का बहुत मन हो रहा है।"

उसकी बात सुनकर कसाई बड़ा खुश हुआ। रुपये लेकर वह फौरन गाड़ी से नीचे उतर आया। उसने घोड़े की लगाम राबिन-हुड के हाथ में दे दी। राबिनहुड बोला, "तुम अपने कपड़े भी मुझे दे दो, और लो, मेरे कपड़े पहन लो।"

इसके बाद राबिनहुड कसाई के वेश में मांस से लदी हुई गाड़ी हांकता हुआ नोटिंगहम के बाज़ार में पहुंच गया। वहां जाकर वह आवाज़ लगा-लगाकर गोश्त बेचने लगा।

वह बहुत ही सस्ते दाम पर गोश्त बेच रहा था। दूसरे कसाइयों ने जब यह देखा कि एक नया कसाई इतने सस्ते दाम

पर गोश्त बेच रहा है तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उनमें से एक बोला, "इस मूर्ख को व्यापार करना नहीं आता! लगता है, कहीं मुफ्त में इतना माल पा गया है, वरना इतना सस्ता कैसे बेचता?"

दूसरा बोला, "नहीं-नहीं, मुझे तो यह कोई चोर या लुटेरा मालूम पड़ता है, जिसने रास्ते में किसी कसाई को मारकर उसका माल छीन लिया है और अब जल्दी-जल्दी सस्ते भाव में बेचकर यहां से भागना चाहता है।"

राबिनहुड को इसका कुछ पता नहीं था कि दूसरे कसाई उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। वह आवाज़ लगाकर गोश्त बेचता रहा। कसाइयों ने देखा कि इस आदमी से झगड़ा करना बेकार है, इसलिए उनमें से एक उसके पास जाकर बोला, "क्यों भाई, लगता है, तुम कोई नये आदमी हो। लेकिन अगर तुम्हें हमारे साथ रोज़गार करना है तो हमारे नियमों को मानना पड़ेगा। तुम बहुत सस्ते दामों पर मांस बेच रहे हो। इस तरह तुम्हारा भी नुकसान होगा और हमारा भी; क्योंकि इससे बाज़ार का भाव गिर जाएगा। अच्छा, तुम्हें मालूम है कि आज हम लोगों को कोतवाल साहब ने अपने घर दावत दी है? तुम भी चले आना।"

वह कसाई असल में राबिनहुड से दोस्ती करना चाहता था, इसीलिए उससे इस तरह बातें कर रहा था। राबिनहुड बोला, "अच्छा, कोतवाल साहब ने कसाइयों और मांस के व्यापारियों को दावत दी है? ठीक है, मैं वहां ज़रूर आऊंगा। मेरा माल भी अब तक बिक चुका है।" इसके बाद वह अपनी गाड़ी लेकर एक सराय में पहुंचा। गाड़ी वहां रोककर उसने सराय के मालिक को कुछ रुपये दिए और खाना खाकर आराम से सो गया। शाम को सज-धजकर वह कोतवाल के यहां पहुंचा।

इस शहर का कोतवाल बाज़ार में आनेवाले व्यापारियों को अक्सर अपने यहां बुलाया करता था और उनसे पैसे लिया करता

था। बाज़ार में माल बेचने की इजाज़त देने के बदले वह व्यापारियों से खूब घूस लेता था। लेकिन लोगों को कहीं शक न हो जाए, इसीलिए वह उन्हें अपने यहां दावत पर बुलाता था और बड़ी चालाकी से उनसे सौदा तय करता था। इस बाज़ार में मांस

बेचने के लिए बहुत बड़े-बड़े व्यापारी आया करते थे। आज कोतवाल ने मांस के व्यापारियों को अपने यहां दावत के बहाने बुलाया था। एक बड़े-से कमरे में एक मेज़ पर खाने-पीने की चीज़ें सजी हुई थीं। धीरे-धीरे व्यापारी पहुंचने लगे। कोतवाल आगे बढ़कर सबका स्वागत करता था और उन्हें अपनी-अपनी जगह पर बिठाता था।

कोतवाल ने राबिनहुड को अपने पास बिठाया। उसे लगा कि यह मांस का बहुत बड़ा व्यापारी है। इतने में एक आदमी ने कोतवाल के पास आकर उसके कान में कहा, "हुज़ूर, यह आदमी बिल्कुल नया मालूम होता है। इसे व्यापार-धन्धे का कोई ज्ञान नहीं है। आज इसने बाज़ार में बहुत ही सस्ते दाम पर माल बेचा है। मुझे लगता है कि इसके पास बहुत-सा रुपया है। कोई चालाक आदमी चाहे तो इस मूर्ख आदमी से सारा धन छीन सकता है।"

कोतवाल बड़ा चालाक आदमी था। उसने सोचा कि मैं ही क्यों न इस आदमी के रुपये निकलवा लूं। उसने राबिनहुड से कहा, "क्यों भाई, शायद तुम्हारे पास काफी पैसा है। आज बाज़ार में तुमने जिस तरह मांस बेचा है, उससे सब लोग बहुत घबराए हुए हैं। लगता है, तुम्हें रुपये-पैसे की कोई फिक्र नहीं है।"

राबिनहुड बोला, "हां साहब, रुपये-पैसे की मुझे कोई कमी नहीं! मेरे पास बहुत-से जानवर हैं। मैं उन्हें बेच नहीं पाया, इसलिए उनमें से कुछ को मारकर आज मैं उनका गोश्त ही बेचने निकल पड़ा। अगर कोई मेरे गाय-बैल खरीद ले तो बड़ा अच्छा हो। मैं उन्हें बेचना चाहता हूं। अगर कोई मुझे बीस मुहरें दे दे तो मैं अपने सारे जानवर दे सकता हूं।"

कोतवाल को लालच हो आया। उसने सोचा कि कहीं यह दूसरे को जानवर न बेच दे, इसलिए वह फौरन बोला, "अगर तुम्हें कोई ग्राहक नहीं मिलता हो, तो लाओ, मैं खुद ही खरीद

लूं। कल तुम अपने सारे गाय-बैल बाज़ार लेते आना। मैं तुम्हें बीस मुहरें दे दूंगा।"

राबिन बोला, "मेरे सारे जानवर जंगल में चरते रहते हैं। उनको इकट्ठा करने में मुझे बड़ा आलस लगता है। अच्छा हो कि कल आप मेरे साथ जंगल चलें और उन्हें लेते आएं।"

"हां, ठीक है, मैं चला चलूंगा। तो आज रात तुम यहीं रुक जाओ, कल हम लोग चलेंगे।"

राबिनहुड नहीं चाहता था कि कोतवाल के यहां उसे रहना पड़े, लेकिन उसे कोतवाल का कहना मानना ही पड़ा। अगर वह उसका कहना नहीं मानता तो उसे शक हो सकता था। इसी समय एक नौकर अन्दर आया। नौकर फौरन राबिनहुड को पहचान गया। राबिनहुड ने भी उसे पहचान लिया। यह नौकर और कोई नहीं, खुद लिटिल जान था।

थोड़ी देर बाद जान फिर से कमरे में आया। इस बार उसके पास कुछ गिलास और शराब की एक बोतल थी। वह सबको शराब बांटने लगा। राबिनहुड के पास जाकर शराब देते हुए धीरे से उसके कान में बोला, "आज रात नीचे भंडार घर में मिलना।"

रात में काफी देर तक राबिनहुड कोतवाल के साथ बैठा बातें करता रहा। अन्त में कोतवाल को नींद आने लगी। उसने एक नौकर के साथ राबिनहुड को एक कमरे में सोने के लिए भेज दिया।

5

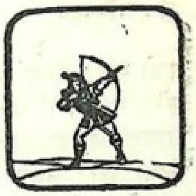

कुछ दिनों बाद एक दिन की बात है, राबिनहुड और लिटिल जान घूमते-घूमते उसी नदी के पुल के पास जा पहुंचे। एक पेड़ के नीचे बैठकर वे लोग बातें करने लगे। इतने में उधर से एक आदमी निकला। उसे देखकर राबिनहुड ने कहा, "उस आदमी को देख रहे हो? मुझे लगता है कि उसकी जेब में काफी पैसे हैं। आओ, ज़रा उससे बात की जाए!"

इतने में वह आदमी पास आ गया। राबिनहुड लपककर उसके आगे जा खड़ा हुआ, लेकिन उस आदमी ने राबिनहुड की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह एक गाना गुनगुनाता हुआ अपने रास्ते चला जा रहा था।

राबिनहुड बोला, "क्यों जी, अन्धे हो क्या? देखकर नहीं चलते!"

वह आदमी बोला, "क्यों, क्या हुआ? तुम कोई नवाब हो? अलग होकर क्यों नहीं चले जाते?"

इतने में राबिनहुड उसका हाथ पकड़कर बोला, "तुम्हारी जेब में जितने पैसे हों, फौरन निकाल दो!"

"वाह, तुम भी खूब मिले! और भी कुछ तुम्हें कहना है!"

"अगर सीधे से पैसे नहीं निकालोगे तो मैं तुमसे छीन लूंगा। आओ, अगर लड़ने की इच्छा हो तो लड़ ही लो।"

"तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं है? इस तरह राह चलते आदमियों से झगड़ा करते हो? तुम्हारे-जैसे मैंने बहुत देखे हैं। भला यह भी कोई बात हुई कि तुम कहो और मैं अपने पैसे निकाल कर तुम्हारे हाथ में रख दूं! चलो हटो, रास्ता छोड़ो।"

राबिनहुड ने गुस्से में आंखें लाल करते हुए कहा, "बेकार

बको मत। अगर सीधे से पैसे नहीं निकालोगे तो तुम मुसीबत में फंस जाओगे।" और यह कहकर उसने लाठी तानी। लेकिन वह आदमी भी कम नहीं था। उसने फौरन राबिनहुड का वार झेल लिया और उलटकर राबिनहुड पर वार किया। राबिनहुड के हाथ से लाठी छूट गई और वह लड़खड़ाकर ज़मीन पर गिर गया। राबिनहुड को ज़मीन पर गिरते देखकर लिटिल जान लपककर वहां आ खड़ा हुआ और उस आदमी की लाठी पकड़कर बोला, "खबरदार! अपनी खैर चाहते हो तो यहां से एक कदम न हिलना।"

उसे देखकर वह आदमी बोला, "अरे, तुम कहां से टपक पड़े! जब कोई आदमी गिर पड़ता है तो मैं खुद उस पर वार नहीं करता। लेकिन तुम अकेले हो या और लोग भी तुम्हारे साथ हैं? अगर कोई और साथ हों तो उन्हें भी बुला लाओ। मैं सबको अपनी लाठी का स्वाद चखा दूं।"

इतने में राबिनहुड ने खड़े होते हुए कहा, "नहीं-नहीं, अब रहने दो; मालूम हो गया कि तुम कोई बहादुर आदमी हो!"

वह आदमी कुछ सकपका गया। उसे लगा कि इस आदमी को वह जानता है। उसने पूछा, "कहीं तुम राबिनहुड तो नहीं हो?"

उसका जवाब लिटिल जान ने दिया और कहा, "हां, तुम इस समय जंगल के बादशाह राबिनहुड के सामने खड़े हो।"

यह सुनते ही उस आदमी ने अपनी लाठी अलग फेंक दी और कहा, "हाय, मुझसे बड़ी गलती हो गई। मैं तो तुमसे ही मिलने निकला था। मेरा नाम विल है और मैं तुम्हारा भाई हूं।"

राबिनहुड विल के साथ बचपन में खेला था। इसी जंगल में दोनों ने साथ-साथ तीर चलाने का अभ्यास किया था। इतने दिनों बाद अपने बचपन के साथी को पाकर राबिनहुड फूला नहीं समाया। उसने विल को गले लगा लिया और पूछा, "लेकिन तुम मुझसे मिलने के लिए क्यों निकले थे? मैं तो एक लुटेरा हूं; और

अगर पकड़ लिया जाऊं तो सीधे फांसी पर ही मुझे लटकाया जाएगा।"

विल बोला, "मैं यह सब जानता हूं, लेकिन गांव में रहना अब मेरे लिए संभव नहीं रह गया है, मैं अब तुम्हारे साथ ही रहना चाहता हूं।"

राबिनहुड ने उसे भी अपने दल में शरीक कर लिया। जितने भी बहादुर और हिम्मती आदमी उसे मिलते थे और उसके साथ रहना चाहते थे, उन्हें वह खुशी-खुशी अपने दल में शरीक कर लिया करता था। अगर उसे मालूम होता था कि अमुक आदमी बड़ा भारी तीरन्दाज़ है या अच्छी लाठी चलाता है अथवा बहुत बड़ा पहलवान है, तो वह फौरन उसके पास जाता था और उसे किसी न किसी तरह अपने दल में शरीक करके शेरउड के जंगल में ले आता था।

5116

एक दिन राबिनहुड ने सुना कि नोटिंगहम शहर से कुछ दूर जो ईसाई मठ है, उसमें एक पादरी रहता है। वह बहुत बहादुर आदमी है और अब तक किसी से लड़ाई में हारा नहीं है। राबिनहुड ने फौरन उसे भी अपने दल में शरीक करने का निश्चय किया। वह उससे मिलने के लिए चल पड़ा।

चलते-चलते वह एक नदी के किनारे पहुंचा। उस नदी पर कोई पुल नहीं था। वह सोचने लगा कि इस नदी को किस तरह पार किया जाए; क्योंकि तैरकर पार करने में कपड़ों के भीग जाने का डर था।

वह इसी तरह सोच रहा था कि इतने में उसने सुना कि दूसरे किनारे पर कुछ लोग आपस में बातें कर रहे हैं। राबिनहुड ने एक पेड़ पर चढ़कर देखा तो उसके आश्चर्य की सीमा नहीं रही। वहां सिर्फ एक आदमी बैठा था और अकेले ही बातचीत कर रहा था। पागल की तरह वह हवा में हाथ फेंकता था और बड़े जोश से कुछ कह रहा था। उस आदमी ने पादरियों जैसे कपड़े पहन रखे थे। थोड़ी देर में वह खड़ा हो गया और बड़ी तेज़ी से हवा में

मुक्के चलाने लगा। राबिनहुड को यह देखकर बड़ी हंसी आई। लेकिन साथ ही उसे बड़ा आश्चर्य भी हुआ, क्योंकि वह पादरी देखने में बड़ा ताकतवर मालूम होता था। उसने अपनी कमर में तलवार भी बांध रखी थी।

अन्त में राबिनहुड ने ज़ोर से आवाज़ देकर उसका ध्यान अपनी ओर खींचने की कोशिश की। पादरी ने उधर से जवाब दिया, "नदी पार करना चाहते हो? घबराओ मत, अभी आकर मैं तुम्हें पार ले जाता हूं। मैं तो पादरी हूं। दूसरों का भला करना ही मेरा धर्म है।"

यह कहकर पादरी अपनी तलवार और कपड़े उतारकर पानी में घुस गया और इस पार आ पहुंचा। फिर उसने राबिनहुड को कंधे पर बिठा लिया। थोड़ी ही देर में वह उसे लेकर दूसरे किनारे पर पहुंच गया। किनारे पर उतरकर राबिनहुड ने कहा, "धन्यवाद, पादरी साहब! मैं आपका बड़ा आभारी हूं।"

इस पर पादरी अकड़कर बोला, "अगर तुम सचमुच मेरा आभार मानते हो तो मेरा एक काम करो। तुम मुझे पार पहुंचा दो। मैंने तुम्हें अपने कंधे पर उठाकर नदी पार कराई है। इसलिए तुम भी मुझे कंधे पर उठा लो और पार ले चलो।"

यह सुनकर राबिनहुड कुछ सोच में पड़ गया। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या करे। वह बोला, "कहीं तुम मज़ाक तो नहीं कर रहे हो?"

पादरी बोला, "मज़ाक! कैसा मज़ाक! अगर तुम मेरा काम नहीं करना चाहते हो तो ऐसे कहो; लेकिन चूंकि मैंने खुशी-खुशी तुम्हारा काम किया है, इसलिए तुम्हें भी मेरा काम करना चाहिए।"

अब राबिनहुड के सामने और कोई चारा नहीं था। पादरी को कंधे पर उठाकर उसे नदी पार करनी ही थी। उसने पादरी को उठाने की कोशिश की, लेकिन पादरी तो बहुत भारी था। उसे उठाते-उठाते राबिनहुड हांफने लगा। किसी तरह गिरते-

पड़ते वह उसे नदी के किनारे तक ले गया और फिर उसे नीचे उतारकर बोला, "पादरी साहब, इससे तो यही अच्छा हो कि आप मुझे फिर से पार पहुंचा दें। मुझे आपका उपकार मानने की इच्छा नहीं है।"

पादरी ने कहा, "वाह, तुम बड़े चालाक निकले। खैर, कोई बात नहीं। चलो, मैं ही तुम्हें उस पार पटक आता हूं।"

यह कहकर उसने राबिनहुड को कंधे पर उठाया और फिर

से पानी में घुस गया। लेकिन इस बार बीच में पहुंचते-पहुंचते पादरी अपने को संभाल नहीं सका और राबिनहुड उसके कंधे से छिटककर पानी में जा गिरा। पादरी हंसने लगा। राबिनहुड को यह बुरा मालूम हुआ। वह किसी तरह पार पहुंचा और वहां से पादरी पर तीरों की वर्षा करने लगा। लेकिन पादरी ने अपने पूरे शरीर पर लोहे की जाली का बख्तर पहन रखा था, इसलिए उस पर तीरों कोई असर नहीं हुआ।

राबिनहुड को गुस्सा आ गया। वह तलवार निकालकर पादरी को मारने के लिए पानी में कूद पड़ा। पादरी ने भी अपनी तलवार निकाल ली। दोनों पानी में लड़ने लगे। लेकिन अचानक राबिनहुड का पैर फिसल गया और गर्दन तक पानी में डूब गया। उसके गिरने पर पादरी ने उस पर वार नहीं किया। गिरे हुए शत्रु पर सच्चे वीर कभी हमला नहीं करते। पादरी की यह उदारता देखकर राबिनहुड बोला, "पादरी साहब, आपके जैसे सच्चे वीर मैंने बहुत कम देखे हैं। ज़रा मुझे यह तुरही बजा लेने दीजिए।" यह कहकर राबिनहुड ने तीन बार अपनी तुरही बजाई। पलक मारते ही पचास हथियारबन्द आदमी घोड़े दौड़ाते हुए वहां आ पहुंचे।

पादरी यह देखकर भौंचक्का रह गया। उसने घबराकर कहा, "यह क्या! ये लोग कहां से निकल आए?"

राबिनहुड उसकी बात सुनकर हंस पड़ा। पादरी ने फिर कहा, "अच्छी बात है, ज़रा मुझे भी तीन बार सीटी बजाने दो।"

यह कहकर पादरी ने मुंह में उंगली डालकर तीन बार ज़ोर-ज़ोर से सीटी बजाई। सीटी की आवाज़ सुनते ही चारों ओर से करीब चालीस-पचास शिकारी कुत्तों का झुंड डाकुओं पर टूट पड़ा। डाकू उन पर तीर चलाने लगे। लेकिन कुत्ते होशियार थे। वे उछल-उछलकर निशाने से बच जाते थे। इतना ही नहीं, उनमें से जिस कुत्ते को कोई तीर मिल जाता, वे फौरन उस उठाकर पादरी के पास पहुंचा देते।

राबिनहुड के साथी यह देखकर हैरान रह गए। इतने में विल भी वहां आ पहुंचा। वह कुछ पीछे रह गया था। आते ही उसने पादरी को पहचान लिया। उसने कहा, "अरे पादरी साहब, अपने कुत्तों को अपने पास बुला लीजिए।" फिर उसने राबिनहुड को बताया कि ये फाउण्ट्स मठ के पादरी हैं। उसने पादरी को भी बताया कि जिससे अभी तुम लड़ रहे थे, वह और कोई नहीं, जंगल का बादशाह राबिनहुड ही है।

पादरी चौंककर बोला, "राबिनहुड! मुझसे बड़ी भूल हुई। मैं क्या जानता था कि तुम राबिनहुड हो, वरना मैं तुमसे इस तरह झगड़ा तो नहीं करता। खुशी-खुशी पार पहुंचा देता।"

राबिनहुड ने कहा, "पादरी साहब, यह बात तो ठीक है लेकिन क्यों नहीं आप भी हमारे दल में शरीक हो जाते? अपने कुत्तों को लेकर शेरउड के जंगल में चले आइए। वहां हम लोग आपके लिए एक आश्रम बनवा देंगे। आप वहीं रहिएगा और हम लोगों को धर्म की शिक्षा दीजिएगा। तो आप हमारे साथ रहेंगे न?"

पादरी राज़ी हो गया। दूसरे दिन से ही वह अपने कुत्तों को साथ लेकर शेरउड के जंगल में चला आया। वहां राबिनहुड के साथियों ने उसके लिए एक झोंपड़ी बनवा दी।

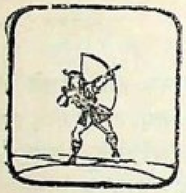

6

उधर कोतवाल ने अपने घर लौटकर राबिनहुड को पकड़ने की तैयारी शुरू की। पहले उसने कई सिपाहियों को उसे पकड़ने के लिए भेजा, लेकिन राबिनहुड के साथियों ने सबको मार भगाया। धीरे-धीरे राबिनहुड की शिकायत राजा के कान तक गई। राजा को बड़ा गुस्सा आया। उसने फौरन कोतवाल को हुक्म दिया कि राबिनहुड को गिरफ्तार किया जाए, वरना तुम्हें नौकरी से बरखास्त कर दिया जाएगा।

राजा के दरबार में गिसबोर्न नाम का एक सरदार था। वह बड़ा अच्छा तीरन्दाज़ और बहादुर आदमी था। उसने जब यह सुना कि राबिनहुड को पकड़ने के लिए इनाम की घोषणा हुई है, तो वह राजा से आज्ञा लेकर कोतवाल के पास आया और बोला "कोतवाल साहब, मैं राबिनहुड को पकड़ने जाना चाहता हूं।"

कोतवाल ने उससे पूछा, "आपको कितने सिपाहियों की ज़रूरत होगी?"

सरदार बोला, "सिपाही? मुझे एक भी सिपाही की ज़रूरत नहीं। मैं खुद यह काम करूंगा। लेकिन आप अपने आदमियों को जंगल के पास ही तैयार रखिएगा। जब मैं अपनी चांदी की तुरही बजाऊं तो फौरन आप अपने आदमियों को लेकर मेरी मदद के लिए आ जाइएगा।"

इधर राबिनहुड के दो साथी लिटिल जान और विल उस दिन अपने दल के सिपाहियों के लिए कुछ पोशाक खरीदने बाज़ार गए। वे यह जानते थे कि कोतवाल के सैनिकों की उन पर कड़ी नज़र है। इसलिए दोनों ने साथ जाना ठीक नहीं समझा। विल शहर में चला गया और जान थोड़ी दूर पर एक

टीले पर बैठकर उसकी राह देखने लगा।

कुछ देर बाद जान ने देखा कि विल तेज़ी से भागता चला आ रहा है। उसके पीछे कोतवाल अपने चालीस-पचास आदमियों के साथ दौड़ा आ रहा है। विल जान बचाकर भाग रहा था।

जान टीले पर बैठा-बैठा यह सब अच्छी तरह देख रहा था। अचानक उसने देखा कि एक सिपाही विल के पास पहुंच गया और उसे पकड़ने की कोशिश करने लगा। फौरन जान ने अपने तरकस से एक तीर निकाला और उस सिपाही को निशाना बनाकर तीर चला दिया। तीर निशाने पर ठीक बैठा। सिपाही चीख मारकर ज़मीन पर लेट गया।

यह देखकर और सिपाहियों में भगदड़ मच गई। उनकी समझ में नहीं आया कि तीर कहां से आया। अचानक उन्होंने देखा कि टीले पर एक आदमी बैठा है और वहीं से तीर चला रहा है। वे लोग उसकी ओर लपके।

जान ने सिपाहियों को अपनी ओर आते देखकर फिर से धनुष पर बाण चढ़ाया, लेकिन इस बार अचानक उसका धनुष टूट गया। इतने में सिपाही उसके करीब आ पहुंचे। जान ने खाली हाथों ही उन्हें मार-पीटकर भगाने की कोशिश की, लेकिन वे बहुत थे। कुछ ही देर में सबने मिलकर उसे पकड़ लिया। उसके हाथ-पैर बांध दिए गए। कोतवाल उसे देखकर बोला, "क्यों, तुमने ही मेरे चांदी के बर्तन चुराए थे न! आज फंसे हो! अब तुम्हें सीधे फांसी पर चढ़ाता हूं!"

सिपाही उसे खींचकर एक दूसरे टीले पर ले गए। वहां उन्होंने एक पेड़ पर रस्सी डालकर फन्दा बनाया और उसके गले में रस्सी बांध दी।

कोतवाल ने कहा, "अब बोलो, यहां तुम्हें कौन बचाने आएगा?"

जान कुछ नहीं बोला। बेचारा कहता भी क्या? वह अकेला था और ये इतने सारे थे।

कोतवाल ने उसे फांसी पर लटकाने का हुक्म दिया, "एक··· दो···" लेकिन वह तीन कहे, इसके पहले ही दूर जंगल से एक तुरही के बजने की आवाज़ आई। इसे सुनकर कोतवाल बोला, "यह तो गिसबोर्न की तुरही की आवाज़ है। लगता है, उसने राबिनहुड को गिरफ्तार कर लिया है।"

फिर सिपाहियों से बोला, "अभी इस बदमाश को यहीं बांध दो। पहले चलो, हम लोग उस पाज़ी को भी लेते आवें। राबिनहुड और इसको साथ-साथ फांसी पर चढ़ाएंगे। चलो, जल्दी करो!" उन्होंने लिटिल जान को कसकर पेड़ के साथ बांध दिया और फिर वे लोग राबिनहुड को पकड़ने में सरदार गिसबोर्न की मदद के लिए चल पड़े।

उस दिन सुबह की बात है, राबिनहुड ने जंगल में अचानक एक घुड़सवार को देखा। उसने सोचा कि चलकर पता लगाना चाहिए कि यह कौन है। इसलिए वह अपने साथियों से अलग होकर चुपचाप उस सवार का पीछा करने लगा। जब वह उसके कुछ समीप पहुंचा तो उसे उस आदमी की वेषभूषा देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उस आदमी ने घोड़े के चमड़े से अपना सारा शरीर ढक रखा था। यहां तक कि घोड़े के सिर को अपने सिर पर टोपी की तरह पहन रखा था। राबिनहुड ने पास जाकर पूछा, "कौन हो जी तुम?"

वह आदमी बोला, "मैं कोई भी हूं, इससे तुम्हें क्या मतलब? तुम अपना काम देखो!"

राबिनहुड ने कहा, "मैं यहां जंगल की देख-रेख करता हूं। जंगल का रखवाला हूं। मेरा काम यह देखना है कि यहां के राजा के हिरनों का कोई शिकार न करे।"

"अच्छा तो यह बात है! तब तो बहुत अच्छा हुआ। तुम मेरी मदद कर सकते हो! मैं तुम्हें आधा इनाम दिलवाऊंगा। मैं राबिनहुड को पकड़ने के लिए निकला हूं। इस काम में तुम मेरी मदद करो।"

राबिनहुड यह सुनकर चौंका। लेकिन फिर अपने को संभाल कर बोला, "लेकिन राबिनहुड ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? क्या उसने तुमसे झगड़ा किया है ?"

गिसबोर्न ने अपने शरीर से घोड़े का चमड़ा अलग कर दिया और कहा, "लगता है, तुम्हें राबिनहुड से बड़ा प्रेम है। कहीं तुम उसके दल के ही तो कोई लुटेरे नहीं हो ?"

"मैं खुद राबिनहुड ही हूं।"

यह सुनते ही गिसबोर्न के पैरों-तले से ज़मीन खिसक गई। लेकिन फिर अचानक अपने को संभालकर उसने तलवार खींच ली। देखते-देखते वह राबिनहुड पर टूट पड़ा। राबिनहुड पहले से ही तैयार था। दोनों एक-दूसरे से गुंथ गए। अचानक एक पत्थर से ठोकर खाकर राबिनहुड ज़मीन पर आ गिरा। उस ज़माने के युद्ध में गिरे हुए आदमी को उठने का मौका दिया जाता था। लेकिन सरदार गिसबोर्न ने ज़मीन पर गिरे हुए राबिनहुड को उठने का मौका देने के बजाय एक ठोकर मार दी। राबिनहुड इस अपमान को न सह सका। वह गुस्से में कांपने लगा और बिजली की तरह लपककर गिसबोर्न पर टूट पड़ा। सरदार चीख मारकर ज़मीन पर जा गिरा। थोड़ी ही देर में उसके प्राण निकल गए। राबिनहुड ने उसके कपड़े उतारे और खुद पहन लिए। अब वह दूर से देखने में गिसबोर्न ही मालूम होता था।

गिसबोर्न का भेस धरकर उसने असली गिसबोर्न की लाश को एक झाड़ी के पीछे छिपा दिया। गिसबोर्न के चेहरे पर कई घाव लगे थे। इसलिए अब उसे आसानी से पहचाना नहीं जा सकता था। फिर राबिनहुड ने गिसबोर्न की चांदी की तुरही ली और उसे तीन बार बजाया। इसी आवाज़ को कोतवाल और उसके साथियों ने सुना था।

थोड़ी ही देर में कोतवाल बीस सिपाहियों के साथ वहां आ पहुंचा। उसने राबिनहुड को सरदार गिसबोर्न समझा और पूछा, "सरदार, क्या आपने ही तुरही बजाई थी ?"

राबिनहुड ने उसे बताया कि किस तरह उसकी और राबिनहुड की लड़ाई हुई और उसने राबिनहुड को मारा डाला। यह सुनकर कोतवाल बहुत खुश हुआ और बोला, "वाह, आपने एक बहुत बड़ा काम किया ! लेकिन अगर राबिनहुड ज़िन्दा पकड़ा जाता, तो मैं उसे एक दूसरे साथी के साथ आज फांसी पर चढ़ाता !"

राबिनहुड ने पूछा, "उसके साथी के साथ ! वह कौन है ?"

"क्या आपको पता नहीं ? जब आप राबिनहुड को मारने के लिए निकले, तो उसी बीच हमने राबिनहुड के एक साथी को शहर में गिरफ्तार किया। उसका नाम लिटिल जान है। वह राबिनहुड का बहुत बड़ा साथी है। हम उसे फांसी पर चढ़ा ही रहे थे कि आपकी तुरही की आवाज़ आई। हमने सोचा कि आपने राबिनहुड को पकड़ लिया है। इसलिए राबिनहुड और उसके साथी को साथ-साथ फांसी पर चढ़ाने का मौका देखकर हम राबिनहुड को लेने के लिए आपके पास दौड़े चले आए !"

यह सुनकर राबिनहुड कुछ घबराया। उसका साथी जान शत्रु के हाथ में पड़ गया था और अब उसे फांसी पर चढ़ाने की तैयारी हो रही थी। वह बोला, "कोतवाल साहब, क्या आप मेरी बात मानेंगे ?"

"कहिए, कहिए !"

"बात यह है कि मुझे इनाम की ज़रूरत नहीं है। मैंने राबिनहुड को मारा है, इसलिए मैं चाहता हूं कि उसके साथी को भी मैं ही मारूं।"

"ठीक है, यह तो और भी अच्छा है। आप चलिए हमारे साथ। हमने उस बदमाश को एक पेड़ से बांध रखा है।"

उस टीले के पास पहुंचकर राबिनहुड ने कोतवाल से कहा, 'कोतवाल साहब, आप अपने सिपाहियों को लेकर दूर चले जाइए। मैं अकेला ही इस लुटेरे को अभी नरक भेजता हूं।"

जब वे लोग दूर चले गए तो राबिनहुड ने लिटिल जान के

सारे बन्धन काट डाले और उसके हाथ में एक तीर-कमान थमा दिया और कहा, "जान, मैं राबिनहुड हूं।"

लेकिन लिटिल जान तो पहले ही राबिनहुड को पहचान गया था। अब दोनों ने मिलकर कोतवाल को मज़ा चखाने का निश्चय किया। राबिनहुड ने तुरही बजाई और फिर दोनों ने कोतवाल के सिपाहियों पर तीर चलाना शुरू किया। इतने में राबिनहुड की आवाज़ सुनकर उसके दूसरे साथी भी वहां आ पहुंचे। कोतवाल के देखते-देखते कई सिपाही घायल होकर ज़मीन पर गिर पड़े। सिपाहियों में भगदड़ मच गई। थोड़ी देर में कोतवाल बचे-खुचे सिपाहियों को लेकर वहां से भाग निकला।

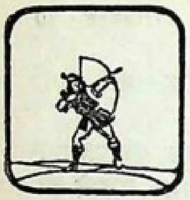

7

एक दिन की बात है, राबिनहुड जंगल में शिकार खेलने निकला। वह अकेला ही चला जा रहा था। सवेरे का समय था। कुछ दूर जाने पर अचानक उसे एक हिरन दिखाई दिया। उसने निशाना लेकर उस पर तीर चलाने की तैयारी की; लेकिन इतने में सामने से एक तीर आया और हिरन के पेट में घुस गया। हिरन उछलकर ज़मीन पर लेट गया।

थोड़ी देर में सामने झाड़ी में से एक नौजवान बाहर निकला। उसके हाथ में धनुष था और कमर में तलवार लटक रही थी। राबिनहुड ने आगे बढ़कर उस नौजवान को रोकते हुए पूछा, "क्यों जी, कौन हो तुम? यह जंगल राजा का है और इसमें हिरन का शिकार करने की मनाही है। क्या तुम्हें यह नहीं मालूम है!"

यह सुनकर भी वह नौजवान नहीं घबराया और तनकर बोला, "तुम मुझे रोकने वाले कौन होते हो? हिरन के शिकार करने का मुझे उतना ही हक है जितना कि राजा को है!"

"लेकिन तुम हो कौन?"

"इससे तुम्हें मतलब?"

राबिनहुड ने कहा, "लगता है, तुम्हें जंगल के कायदे-कानून का कोई ज्ञान नहीं है।"

यह सुनते ही उस नौजवान ने राबिनहुड को डांटते हुए तलवार खींच ली, और कहा, "कायदे-कानून सिखाने वाले तुम हो कौन? निकालो अपनी तलवार! आओ, दो-दो हाथ हो जाएं!"

राबिनहुड तलवार निकालकर उससे भिड़ गया। देखने में तो वह नौजवान बिलकुल लड़का-सा मालूम पड़ता था लेकिन

334 उपन्यास

वह बहुत अच्छी तलवार चलाता था। उसने काफी देर तक राबिनहुड का मुकाबला किया; लेकिन फिर वह थकने लगा। उसका चेहरा लाल हो गया। यह देखकर राबिनहुड ने अपना हाथ कुछ धीमा कर दिया और लड़ाई बन्द करने की कोशिश की। लेकिन मौका देखकर उस जवान ने राबिनहुड के हाथ पर चोट की। राबिनहुड के हाथ से खून निकलने लगा।

जवान बोला, "क्यों, अब लड़ाई से तुम्हारा मन भर गया?"

राबिनहुड ने कहा, "हां, भाई, भर गया। लेकिन तुम हो कौन, तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम रिचर्ड है, और मैं रानी ऐलन का नौकर हूं।"

"तो फिर तुम अकेले यहां शेरउड के जंगल में क्या करने आए हो?"

उस युवक ने अपनी जेब से एक सुन्दर रूमाल निकाला और उससे तलवार पोंछते हुए जवाब दिया, "मैं राबिनहुड नाम के एक लुटेरे की खोज में निकला हूं। मैं रानी की ओर से उसके नाम माफीनामा लाया हूं।" यह कहकर उसने अपना रूमाल जेब में रखा। लेकिन तभी राबिनहुड ने देखा कि उसकी जेब में सोने का एक तीर चमक रहा है। राबिनहुड ने इस तीर को फौरन पहचान लिया। यह वही तीर था, जिसे उसने दंगल में जीतकर मेरियन को भेंट किया था।

राबिनहुड ने उसके चेहरे की ओर ध्यान से देखा और फिर खुश होकर बोला, "मैंने तुम्हें पहचान लिया। यह वही तीर है जिसे मैंने नोटिंगहम के दंगल में जीतकर तुम्हें भेंट किया था। तुम मेरियन हो! खूब भेस बनाया है तुमने!"

"तो क्या तुम राबिनहुड ही हो।"

"और क्या, तुमने मुझे पहचाना नहीं? ओह, मैंने अपने सिर पर यह पट्टी जो बांध रखी है।" यह कहकर राबिनहुड ने अपने सिर से पट्टी खोल दी।

मेरियन बोली, "राबिन! मैंने तो तुम्हें पहचाना नहीं। मैंने तुम्हारे हाथ पर चोट भी पहुंचा दी।" यह कहकर उसने अपना रूमाल निकाला और राबिनहुड के हाथ पर बांध दिया।

इतने दिनों बाद राबिनहुड से मिलकर मेरियन बहुत प्रसन्न हुई। राबिनहुड की भी खुशी की सीमा नहीं थी। एक पेड़ के नीचे बैठकर दोनों काफी देर तक तरह-तरह की बातें करते रहे। बरसों बाद दोनों मिले थे। दोनों एक-दूसरे को पिछले दिनों की

कहानी सुनाना चाहते थे।

इसके बाद राबिन मेरियन को अपने साथियों के पास ले गया। उसके साथी मेरियन से मिलकर बहुत प्रसन्न हुए। मेरियन बोली, "तुम लोगों के किस्से रानी ऐलन तक पहुंच गए हैं। वे तुम सबसे मिलना चाहती हैं। राबिन, वे तुम्हारी निशानेबाज़ी देखना चाहती हैं। अगले हफ्ते लन्दन में एक बहुत बड़ा दंगल होने वाला है। उसमें राजा के बहुत बड़े-बड़े तीरन्दाज़ भाग लेंगे। रानी ने कहलवाया है कि अपने चार चुने हुए साथियों को तुम भी दंगल में भाग लेने के लिए भेजना। डरने की कोई बात नहीं है। रानी ने वादा किया है कि वहां कोई तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा। मैंने रानी से कहा था कि मुझे इजाज़त हो तो मैं खुद राबिनहुड को बुलाकर ला सकती हूं। रानी खुशी-खुशी राज़ी हो गई। साथ ही उन्होंने अपनी अंगूठी भी दी है। इस अंगूठी की वजह से तुम्हें वहां कोई खतरा नहीं होगा और कोई तुम्हें पकड़ नहीं सकेगा।"

यह सुनकर राबिनहुड और उसके सभी साथी बड़े खुश हुए। बहुत दिनों बाद उन्हें किसी दंगल में भाग लेने का मौका मिल रहा था। दूसरे ही दिन राबिनहुड सुबह अपने चुने हुए चार साथियों को लेकर लन्दन की ओर चल पड़ा। राबिनहुड ने लाल-सुर्ख पोशाक पहन रखी थी। उसके दूसरे साथियों ने नीले रंग के कपड़े पहने थे। सबने सिर पर काली टोपियां पहन रखी थीं, जिनमें सफेद रंग के पंख खोंसे हुए थे। राबिनहुड ने अपने हाथ में रानी की दी हुई अंगूठी पहन रखी थी। मेरियन भी उसके साथ-साथ थी।

लन्दन पहुंचकर मेरियन राबिनहुड और उसके साथियों को रनिवास में ले गई। रानी की अंगूठी पास होने के कारण किसी ने इन लोगों को नहीं रोका। रानी ने राबिनहुड और उसके साथियों का आदर-सत्कार किया और उन लोगों से मिलकर वह बहुत प्रसन्न हुई।

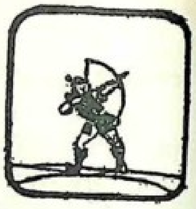

8

लंदन में शहर से कुछ दूर एक बड़ा भारी मैदान था। इसका नाम फिसबरी फील्ड था। इसी मैदान में दंगल होने वाला था। दंगल की तैयारियां शुरू हो गईं थीं। दूर-दूर के तीरन्दाज़ और निशानेबाज़ अपने कमाल दिखाने के लिए इकट्ठे होने लगे थे। दंगल देखने के लिए भी बहुत दूर-दूर से लोग आ रहे थे। इस दंगल में राजा के कई खास सरदार और तीरन्दाज़ भाग ले रहे थे। लोगों के तम्बू मैदान के आस-पास लगे हुए थे। मैदान के दोनों तरफ दर्शकों के बैठने की जगह बनी हुई थी। एक तरफ एक बड़ा भारी शामियाना तना था। इसमें बीच में राजा और रानी के लिए सिंहासन लगा था। दूसरे दरबारियों और सरदारों के बैठने के लिए भी इसी शामियाने में खास इन्तज़ाम किया गया था।

जिस दिन दंगल होने वाला था, उस दिन सुबह से लोगों की भीड़ मैदान की ओर उमड़ी चली आ रही थी। ठीक समय पर प्रवेश-द्वार से एक घुड़सवार तुरही बजाता हुआ मैदान के बीच आ खड़ा हुआ। उसके पीछे-पीछे छः घुड़सवार और थे, उसके बाद राजा का रथ आया। राजा के साथ रानी और दो राज-कुमार भी थे। उनके पीछे-पीछे दरबारी वगैरह थे। जब राजा और रानी अपने सिंहासन पर बैठ गए, तो दूसरे सब लोग भी अपनी-अपनी जगह जा बैठे।

दंगल की देख-रेख राज्य के सबसे बड़े तीरन्दाज़ टेप्स के ज़िम्मे थी। उसने सौ-सौ गज़ की दूरी पर दस निशाने रखे थे। इन्हीं निशानों पर तीर चलाने थे। दस-दस तीरन्दाज़ों की टुकड़ियां बना दी गई थीं। इनामों की भी घोषणा कर दी गई

थी। पहला इनाम साने की चालीस मोहरों से भरी एक थैली के रूप में था। दूसरे इनाम में चांदी के चालीस रुपयों की थैली थी, और तीसरे इनाम में चांदी की एक तुरही थी।

दंगल शुरू हुआ। निशाने के ठीक बीच में तीर मारना था। इस दंगल में टेप्स पहला, गिलबर्ट दूसरा और क्लिफ्टन नाम का एक सरदार तीसरा आया।

दूसरी बार निशान को एक सौ बीस गज़ की दूरी पर रखा गया। यह दंगल सिर्फ राजा के तीरन्दाज़ों के लिए ही नहीं था। इसमें कोई भी भाग ले सकता था। लेकिन यह बहुत मुश्किल निशान था। सिर्फ दस-बारह आदमी ही इसके लिए हिम्मत बांध सके।

राजा ने कहा, "मेरे तीरन्दाज़ों के सामने ये लोग कहां टिक सकेंगे? बेकार ही अपनी हंसी कराने के लिए ये आगे आए हैं।"

रानी बोली, "स्वामी, क्या आपके ये दस तीरन्दाज़ इंग्लैंड में सबसे बड़े हैं।"

राजा ने बड़े गर्व के साथ कहा, "और क्या! इंग्लैंड ही क्यों, पूरे यूरोप में मेरे तीरन्दाज़ों का कोई मुकाबला नहीं कर सकता! अगर इन्हें कोई हरा दे, तो मैं उसे पांच सौ पौण्ड का इनाम देने को तैयार हूं।"

रानी ने कहा, "ठीक है स्वामी, लेकिन मैं भी अपने कुछ तीरन्दाज़ों को दंगल में उतारना चाहती हूं। लेकिन उसके पहले आपको एक वादा करना होगा।"

"कैसा वादा?"

"मेरे पास भी पांच तीरन्दाज़ हैं। वे आपके दसों बहादुरों को हरा देंगे, लेकिन आपको वादा करना होगा कि उन लोगों की सज़ाएं माफ कर दी जाएंगी और उन्हें कोई तकलीफ नहीं दी जाएगी।"

यह सुनकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। पहले तो उसने

यह समझा कि रानी उससे मज़ाक कर रही है। लेकिन वादा करने के बाद वह बोला, "तुम सोच लो, कहीं बाद में तुम्हें पछताना न पड़े। मेरे तीरन्दाज़ों जैसे निशानेबाज़ तुमको कहीं नहीं मिलेंगे।"

लेकिन रानी ने हंसकर कहा, "कोई बात नहीं।" फिर उसने मेरियन को इशारा किया। मेरियन उठकर वहां से चली गई।

इस बार के मुकाबले में गिलबर्ट और टेप्स की बराबरी रही, ओलविन का तीसरा और जियोफ्रे नाम के तीरन्दाज़ का चौथा दर्जा रहा तथा क्लिफ्टन पांचवां आया। अब आखिरी दंगल होने वाला था।

राजा ने खड़े होकर ऐलान किया, "अब गिलबर्ट और उसके चार साथियों के अलावा रानी के तीरन्दाज़ों के बीच दंगल होगा!"

राजा की बात सुनकर लोगों को आश्चर्य हुआ। वे रानी के तीरन्दाज़ कौन हैं? थोड़ी ही देर बाद दूसरी तरफ से पांच घुड़सवार मैदान में आकर खड़े हो गए। उनके साथ ही मेरियन भी एक घोड़े पर सवार होकर आई थी।

नये आने वाले तीरन्दाज़ों में से चार ने नीले रंग के कपड़े पहन रखे थे और पांचवें ने लाल रंग की चमकीली पोशाक पहन रखी थी। ये राबिनहुड और उसके साथी थे। लेकिन यहां उन्हें कोई नहीं पहचान पाया। राबिनहुड सबसे आगे चल रहा था। सबके हाथ में तीर-धनुष थे।

पांचों तीरन्दाज़ों ने आगे आकर राजा और रानी को झुककर सलाम किया। मेरियन ने कहा, "महारानी, आपने जिन लोगों को लाने का हुक्म दिया था, उन्हें मैंने आपके सामने हाज़िर कर दिया है। ये लोग आपकी ओर से दंगल में भाग लेंगे।"

राजा ने रानी से पूछा, "ये सब कौन हैं?"

उस समय हरफोर्ड का बिशप 'धर्मगुरु' वहां हाज़िर था।

वह अचानक बोल उठा, "सरकार! ये पांचों शेरउड के जंगल के लुटेरे हैं! राहगीरों को लूटना और इधर-उधर डाके मारते रहना ही इन लोगों का पेशा है। यह आदमी, जिसने लाल पोशाक पहन रखी है, इनका सरदार है। इसका नाम राबिनहुड है। और बाकी ये सब इसके साथी हैं।"

रानी हंसकर बोली, "हां, विशप साहब इन लोगों को अच्छी तरह पहचानते हैं।"

यह सुनकर राजा चौंका। उसने गम्भीरता से रानी से पूछा, "क्यों, क्या यह बात सच है?"

रानी ने कहा, "जी हां, लेकिन अपना वादा न भूलें!"

"हां, इससे तुम बेफिक्र रहो। लेकिन मेरा वादा सिर्फ चालीस दिनों के लिए है!"

इसके बाद दंगल शुरू हुआ। पहला निशाना एक सौ बीस गज़ की दूरी पर रखा गया। पहले राजा के तीरन्दाज़ों की बारी थी। सबसे पहले क्लिफटन ने निशाना साधकर तीर चलाया। लेकिन वह खाली गया। इसके बाद उसने दो-तीन तीर और चलाए, लेकिन वे भी निशाने पर नहीं लगे।

इसके बाद राबिनहुड की तरफ से विल ने तीर चलाया। दो-तीन तीरों के बाद उसका तीर निशान के काले घेरे के अन्दर लगा, लेकिन ठीक बीच में नहीं लग सका। इसके बाद दूसरा निशाना तय किया गया। इस बार राजा की ओर से जियोफ्रे और राबिनहुड की ओर से ऐलन मैदान में उतरे। जियोफ्रे के तीनों तीर काले निशान के किनारे पड़े और ऐलन के तीर भी उसके पास ही पड़े। इसके बाद स्टटली रानी की ओर से और ओलविन राजा की ओर आए। ओलविन के तीर तो काले निशान पर ही पड़े, लेकिन स्टटली के तीर निशान से बाहर पड़े।

यह देखकर राबिनहुड बोला, "यह तुम क्या कर रहे हो स्टटली? क्या रानी का अपमान करना है? इस तरह शेरउड का नाम न डुबाओ।"

स्टटली बड़ा शर्मिन्दा हुआ। उसने फिर से एक तीर चलाया, जो सीधा जाकर काले निशान के बीचोंबीच लगा। ऐसा सच्चा निशाना अभी तक किसी ने नहीं मारा था। लेकिन फिर भी जीत ओलविन की ही हुई, क्योंकि उसने तीनों तीर निशाने पर ठीक चलाए थे। स्टटली के पहले तीन तीर खाली गए थे और चौथा बीच में बैठा था।

राजा ने रानी को देखकर कहा, "लो, तुम्हारे तीन तीरन्दाज़ तो हार गए।"

रानी ने कहा, "जी हां, लेकिन अभी दो और बाकी हैं। उनमें से एक खुद राबिनहुड और दूसरा लिटिल जान है।"

इसके बाद टेप्स आगे आया लेकिन उसके पहले दो तीर खाली गए। तीसरा तीर निशाने के बीच में लगा। फिर लिटिल जान ने धनुष ताना। उसके पहले दोनों तीर निशाने के पास ही बैठे। तीसरे तीर में तो उसने कमाल ही कर दिया। उसका तीसरा तीर टेप्स के तीर को तोड़कर उसकी जगह खुद जा बैठा।

राजा को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। वह बोला, "ऐसी निशानेबाज़ी मैंने आज तक कभी नहीं देखी थी।"

रानी को अपनी जीत की आशा होने लगी। वह हंसकर बोली, "महाराज, अब तक दोनों पक्ष बराबर रहे हैं। अब देखें, गिलबर्ट और राबिनहुड क्या करते हैं!"

गिलबर्ट ने बड़ी सफाई से एक के बाद एक तीन तीर छोड़े। तीनों काले निशान के भीतर ही लगे, लेकिन उनमें से कोई भी उसके बीच में नहीं लगा। इसके बाद राबिनहुड आगे आया। उसके तीनों तीर गिलबर्ट के तीरों के बीच में जो जगह थी उसी में जाकर लगे। तीसरा तीर निशान के बीचों-बीच लगा।

गिलबर्ट राजा का बहुत प्रिय आदमी था। राजा उसे अपने राज्य का सबसे बड़ा तीरन्दाज़ मानता था। वह चिढ़कर बोला, "गिलबर्ट हारा नहीं। उसके तीनों तीर निशान पर ठीक बैठे।"

राबिनहुड ने झुककर सलाम किया और कहा, "सरकार, आप यह मानते हैं कि हम दोनों के तीर ठीक जगह पर पड़े हैं, इसलिए हम दोनों बराबर रहे, तो एक बार फिर से हमारी परीक्षा ली जाए। लेकिन इस बार मेहरबानी करके मुझे निशाना रखने की इजाज़त दीजिए।"

राजा ने उसे इजाजत दे दी। राबिनहुड पास ही से एक पेड़ की पतली-सी डाल काट लाया। अपनी छुरी से उसने डाली का छिलका उतार दिया और जब यह बहुत ही पतली हो गई तो फिर इसी पतली डाल को उसने निशान की जगह खोंस दिया कहा, "गिलबर्ट, यह डाली ही मेरा निशान है। इसी पर तीर चलाओ।"

गिलबर्ट कुछ घबराया। डाली इतनी पतली थी कि उसे साफ-साफ दिखाई भी नहीं दे रही थी, लेकिन उसे तीर तो चलाना ही था। राजा का मान तो उसे रखना ही था, इसलिए वह अकड़ता हुआ अपनी जगह पहुंचा। उसने निशान साधकर और कान तक धनुष खींचकर तीर चला दिया। लेकिन उसका तीर डाली छू तक न सका।

फिर राबिनहुड आगे आया। उसने अपने तरकश में से एक पतला-सा तीर निकाला और बहुत आसानी से निशाना साधकर तीर चला दिया। देखते-देखते डाली के दो टुकड़े हो गए और तीर आगे चला गया।

गिलबर्ट ने कहा, "लगता है, तुमने अपने धनुष पर कोई जादू कर रखा है! वरना ऐसा निशाना मारना संभव नहीं है।"

राजा का तो बुरा हाल था। अपने राज्य के सबसे बड़े तीरन्दाज़ को इस तरह हारते देखकर उसे बड़ा अफसोस हुआ; साथ ही गुस्सा भी आया। उसने रानी को इनाम बांटने का हुक्म दिया और फिर वह घोड़ा दौड़ाता हुआ अपने महल में लौट आया। उसने रानी से भी बात नहीं की।

राजा के चले जाने के बाद रानी ने राबिनहुड और उसके साथियों को पास बुलाया और उन्हें शाबाशी देते हुए कहा, "मैं तुम लोगों से बहुत खुश हूं। तुम लोगों ने मेरा मान रख लिया। यह लो दंगल में जीतने का इनाम!" यह कहकर उसने राबिनहुड को एक थैली दी, जिसमें सोने की चालीस मोहरें थीं। लिटिल जान को चांदी के चालीस रुपयोंवाली थैली मिली और ऐलन को चांदी की एक तुरही इनाम में मिली।

दंगल खत्म हो गया। राबिनहुड और उसके साथी फिर से जंगल में लौट आए।

पुस्तकालय
परि सं ... 5116

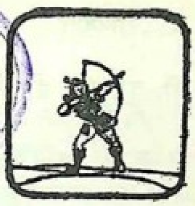

9

राजा हेनरी ने अपना वादा पूरा किया। उसके हुक्म से सिपाहियों ने राबिनहुड को रोकने की कोशिश नहीं की। राबिनहुड और उसके साथी सही-सलामत शेरउड के जंगल में पहुंच गए। चालीस दिन तक उन्हें किसी ने नहीं छेड़ा। लेकिन इसके बाद फौरन राजा ने नोटिंगहम शहर के कोतवाल के नाम हुक्म भेजा कि जिस तरह भी हो, डाकुओं को गिरफ्तार किया जाए, वरना तुम्हें नौकरी से निकाल बाहर किया जाएगा।

कोतवाल तो पहले ही राबिनहुड से चिढ़ा हुआ था। इसके अलावा उसकी लड़की भी राबिनहुड से नाराज़ थी, क्योंकि उस दिन नोटिंगहम के दंगल में वह भी मौजूद थी, और राबिनहुड ने सोने का तीर जीतकर उसे देने के बजाय मेरियन को दिया था। उसी दिन से वह राबिनहुड से बदला लेने के लिए तड़प रही थी।

एक दिन की बात है। फूटे बर्तनों की मरम्मत करने वाला एक कारीगर कोतवाल के घर पहुंचा। उसका नाम मिडिल था। वह बड़ा ही गप्पी आदमी था। वह काम कम और बात ज़्यादा करता था। बर्तनों की मरम्मत करते-करते वह बोला, "अगर मैं राबिनहुड को पकड़ पाऊं, तो उसे ऐसा मज़ा चखाऊं कि वह भी याद करे।"

कोतवाल की लड़की वहीं बैठी थी। वह बोली, "अगर तुम राबिनहुड को पकड़ लाओ, मैं तुम्हें मुंहमांगा इनाम दूं!"

मिडिल जैसे इसी मौके की तलाश में था। वह फौरन राज़ी हो गया। राबिनहुड को पकड़ने निकला। घूमता-घूमता वह शेरउड के जंगल में जा पहुंचा। जंगल में कुछ दूर जाने पर उसे एक युवक मिला। उसने मिडिल से बड़ी बेपरवाही से पूछा, "क्यों

जी, तुम कौन हो और कहां से आ रहे हो?"

मिडिल बोला, "मैं राबिनहुड नाम के लुटेरे को पकड़ने निकला हूं। मुझे कोतवाल साहब की लड़की ने राजा की मोहर लगा एक हुक्मनामा भी दिया है। मेरा नाम मिडिल है।"

उस युवक ने कहा, "अच्छा, ज़रा देखें तो कैसा हुक्मनामा है!"

मिडिल बोला, "नहीं भाई, उसे तो मैं किसी को भी नहीं दिखाऊंगा। लेकिन अगर तुम राबिनहुड को पकड़ने में मेरी मदद करो तो मैं तुम्हें कोतवाल से बहुत-सा इनाम दिलवा सकता हूं!"

वह युवक हंसकर बोला, "ठीक है, लेकिन ये सब बातें इस तरह राह चलते तय नहीं की जातीं। आओ, पास में ही एक शराबखाना है, वहीं बैठकर बातें करेंगे।"

दोनों शराबखाने में पहुंचे। मिडिल ने शराब लाने का हुक्म दिया। वह बड़ा भारी पियक्कड़ था। एक के बाद एक जाम खाली करने लगा। लेकिन वह युवक बहुत होशियार मालूम होता था। उसने शराब को छुआ तक नहीं। वह धीरे-धीरे मिडिल को बताने लगा कि राबिनहुड को किस तरह पकड़ा जा सकता है। कैसी-कैसी चाल चली जाए कि राबिनहुड अपने-आप हमारे चंगुल में आ फंसे। मिडिल यह सब सुनकर बहुत खुश हुआ। उसे लगा कि राबिनहुड को पकड़ना बहुत ही आसान काम है। इसी खुशी में वह बहुत-सी शराब पी गया। थोड़ी ही देर में वह ऊंघने लगा। मौका देखकर उस युवक ने उसकी जेब से राजा का हुक्मनामा निकाल लिया; फिर वह फौरन वहां से चलता बना।

थोड़ी देर बाद मिडिल को होश आया, लेकिन अब भी वह नशे में चूर था। वह बड़बड़ाने लगा, "हां, तो क्या कह रहे थे तुम? उस बदमाश राबिनहुड को कैसे पकड़ा जाए, यही न?" इतने में अचानक उसने चौंककर अपने आस-पास देखा और फिर

वह चीखने लगा, "अरे, कहां गए तुम ! आंय, मेरी जेब से राजा का हुक्मनामा भी निकाल लिया ! कोई बदमाश मालूम होता है। क्यों जी, वह लड़का जो अभी मेरे पास यहां बैठा था, कहां गया ?" उसने शराबखाने वाले से पूछा।

शराबखाने वाला बोला, "क्यों चीखते हो जी, अभी तो तुम

राबिनहुड के साथ बैठे शराब पी रहे थे, और अब उसी को कोस रहे हो ?"

"क्या कहा ! वही राबिनहुड था ?" मिडिल उछलकर खड़ा हो गया और बोला, "तो फिर तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बतलाया ?"

शराबखाने वाला कुछ नहीं बोला। मिडिल दौड़ता हुआ बाहर निकल गया और राबिनहुड को खोजने लगा। उसे खोजते-खोजते वह फिर से जंगल में पहुंचा। कुछ दूर जाने पर उसने देखा कि राबिनहुड वहीं एक पेड़ की छांह में बैठा था। उसे देखकर मिडिल दूर ही खड़ा रहा और कहने लगा, "क्यों जी, तुमने मेरी जेब से राजा का हुक्मनामा निकाल लिया ! लाओ, फौरन निकालकर रख दो।"

राबिनहुड उसकी बात सुनकर हंसने लगा। उसे हंसते देखकर मिडिल को गुस्सा आ गया। वह राबिनहुड पर टूट पड़ा। लेकिन थोड़ी देर में राबिनहुड ने उसे ज़मीन पर गिरा दिया और कहा, "अगर अपनी जान की खैर चाहते हो तो चुपचाप यहां से चले जाओ !"

मिडिल बोला, "अब मेरा लौटकर जाना संभव नहीं है। कोतवाल की लड़की अपने पिता से कहकर मुझे जेल में डलवा देगी। तुम मुझे अपने दल में भरती कर लो। मैं आगे से तुम्हारा कहना मानूंगा।"

इस तरह वह बर्तन बेचनेवाला भी राबिनहुड के दल में शरीक हो गया। कुछ दिनों के बाद आर्थर नाम का एक आदमी राबिनहुड के दल में शरीक हुआ। आर्थर बड़ा लम्बा-चौड़ा हाथी-जैसा आदमी था। कुश्ती में उसे आज तक कोई नहीं पछाड़ सका था। अब तक वह कई दंगल जीत चुका था।

कोतवाल की लड़की ने किसी तरह आर्थर को भी राज़ी किया कि वह जाकर राबिनहुड को पकड़ लाए। आर्थर वैसे भी अक्सर चोरी-छिपे शेरउड के जंगल में जाता था और अपने खाने

के लिए हिरन मार लाता था। वह खुशी-खुशी तीर-कमान लेकर जंगल की ओर चल पड़ा।

जंगल में पहुंचकर वह एक जगह छिपकर बैठ गया। कुछ देर बाद उधर से एक हिरन को आते देखकर वह निशाना साधने लगा। इतने में पास की एक झाड़ी से एक आदमी निकला और उसे डांटते हुए बोला, "खबरदार, तीर न चलाना! कौन हो तुम?" यह राबिनहुड ही था।

आर्थर बोला, "मुझे रोकनेवाले तुम कौन हो? चुपचाप यहां से चले जाओ, वरना तुम्हारी हड्डी-पसली चूर हो जाएगी। मेरा शरीर नहीं देखते हो?"

लेकिन राबिनहुड उससे बहस करने के लिए तैयार नहीं था। वह लाठी लेकर उससे भिड़ गया। आर्थर ने फौरन लाठी उसके हाथ से छीन ली और उसे ज़मीन पर गिरा दिया। थोड़ी देर के लिए तो राबिनहुड ज़मीन पर पड़ा रहा, लेकिन बिजली की तरह उठकर पीछे से आर्थर के ऊपर कूद पड़ा। वैसे आर्थर बहुत बड़ा पहलवान था, लेकिन इस अचानक हमले को संभाल नहीं सका और औंधे मुंह ज़मीन पर जा गिरा। आज तक वह किसीसे हारा नहीं था। आज पहली बार एक नौजवान ने उसे हराया था। वह बोला, "कौन हो भाई तुम? मैंने बड़े-बड़े पहलवानों से कुश्ती लड़ी, लेकिन कोई मुझे गिरा नहीं सका। आज तुमने मुझे हरा दिया। तुम कोई बहुत बहादुर आदमी मालूम होते हो! कहीं तुम्हीं राबिनहुड तो नहीं हो?"

राबिनहुड हंसकर बोला, "इस जंगल में राबिनहुड के अलावा तुम्हें और कौन पछाड़ सकता है? मैं राबिनहुड ही हूं। अब सच-सच बता दो, तुम जंगल में क्या करने आए थे?"

आर्थर घबराकर उठ खड़ा हुआ और बोला, "असल में मैं तुम्हें पकड़ने के लिए आया था। लेकिन मैं नहीं जानता था कि तुम इतने बहादुर आदमी हो। तुम्हारे-जैसे बहादुर आदमी से तो मैं लड़ने के बजाय दोस्ती करना चाहता हूं!" यह कहकर उसने

राबिनहुड की ओर हाथ बढ़ा दिया। राबिनहुड ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा, "ठीक है, मैं आज से तुम्हें अपने दल में भरती करता हूं। मेरे दल में मेरा एक साथी है, वह भी तुम्हारी तरह तगड़ा है। उसका नाम लिटिल जान है।"

लिटिल जान का नाम सुनकर आर्थर बोला "अच्छा! लिटिल जान भी तुम्हारे साथ है? वह तो मेरा रिश्तेदार है। मैं बहुत दिनों से उससे नहीं मिला हूं। चलो, मुझे उससे मिला दो!"

राबिनहुड उसे अपने साथ अपने दल के दूसरे लोगों से मिलाने के लिए ले गया।

इधर कुछ दिनों बाद राजा हेनरी की मृत्यु हो गई। उसकी जगह उसका लड़का रिचर्ड गद्दी पर बैठा। रिचर्ड बहुत ही बहादुर था और साथ ही बड़ा कोमलहृदय था, लेकिन गद्दी पर बैठते ही उसे लड़ाई में भाग लेने के लिए राजधानी से बाहर चले जाना पड़ा। उसकी गैरहाज़िरी में युवराज जान राजा का काम देखने लगा।

जान ज़रा छोटे दिल का आदमी था। उसने थोड़े ही दिनों में कई बड़े-बड़े सरदारों को दरबार से निकाल दिया और उनकी ज़मीनें ज़ब्त कर लीं। उसने मेरियन के पिता की जागीर भी ज़ब्त कर ली। यही नहीं, वह मेरियन से ज़बरदस्ती विवाह करने की भी कोशिश करने लगा। उसने मेरियन को इतना तंग किया कि अन्त में एक दिन वह पुरुषों के कपड़े पहनकर राजमहल से निकल भागी।

मेरियन भागकर सीधे शेरउड के जंगल में राबिनहुड के पास पहुंची। उसने राबिनहुड को सारी बातें बता दीं। यह सब सुनकर राबिनहुड को बहुत गुस्सा आया। इतने में राबिनहुड के साथी एक आदमी को पकड़कर वहां ले आए। राबिनहुड तो उसे पहचान नहीं सका, लेकिन मेरियन फौरन उसे पहचान गई और बोली, "अरे, ये सर रिचर्ड हैं। हमारे देश के बहुत बड़े

जागीरदार और राजा के दरबारी हैं।"

राबिनहुड फौरन आगे बढ़ा। उसने बहुत आदर के साथ सर रिचर्ड का स्वागत किया। उसने अपने साथियों को हुक्म दिया, "देखो, इन्हें किसी बात की तकलीफ न हो। फौरन इनके लिए अच्छे खाने का इन्तज़ाम करो। ये हमारे मेहमान हैं।"

सर रिचर्ड के स्वागत-सत्कार का बहुत अच्छा प्रबन्ध किया गया था। सर रिचर्ड इससे बहुत खुश हुए और बोले, "धन्यवाद राबिनहुड! आज कितने दिनों बाद मैंने भरपेट भोजन किया। तुम अपने सब साथियों के साथ किसी दिन मेरे घर आना। मैं तुम्हारा खूब स्वागत करूंगा।"

राबिनहुड बोला, "सरदार साहब! लगता है, आप किसी मुसीबत में फंसे हुए हैं। बताइए, अगर मेरे लायक कोई काम हो तो फौरन बताइए!"

सर रिचर्ड ने एक गहरी सांस लेकर कहा, "क्या बताऊं राबिनहुड, मेरा भाग्य ही खराब है। मैं राजा के साथ युद्ध में गया था, लेकिन घायल होकर मुझे वहां से लौटना पड़ा। मेरा एक लड़का है, लेकिन वह इतनी छोटी उम्र में ही लोगों से बहुत लड़ने-भिड़ने लगा है। एक दिन वह एक दंगल में एक बड़े सरदार के साथ लड़ने गया। दंगल में वह सरदार बहुत ज़ख्मी हुआ और कुछ ही दिनों में चल बसा। राजकुमार जान पहले से ही उससे कुछ नाराज़ रहता था। अब तो उसे मौका मिल गया। उसने मेरे लड़के को फांसी पर चढ़ाने की तैयारी की। अपने लड़के को बचाने के लिए मैंने अपनी जागीर, महल वगैरह सब-कुछ बेच डाला। लेकिन इतने से भी कुछ नहीं हुआ तो मुझे बहुत सारा ब्याज देकर बिशप से भी रुपया उधार लेना पड़ा।"

राबिनहुड बोला, "अच्छा, यह तो बहुत बुरा हुआ।"

"हां, मैंने बिशप से छः हज़ार रुपया उधार लिया था। अब उसने मुझसे सारा रुपया वसूलने की धमकी दी है। अगर मैंने रुपये नहीं लौटाए तो मेरी बची-खुची ज़मीन-जायदाद भी ज़ब्त

हो जाएगी।"

"यह तो बहुत बुरा होगा! क्या कोई आपकी मदद नहीं कर सकता?"

"इस समय तो मुझे कोई नहीं दिखाई देता। अगर राजा हेनरी होते तो मुझे कोई चिन्ता नहीं थी। अब मैं किसके पास मदद के लिए जाऊं!"

राबिनहुड कुछ देर तक सोचता रहा। फिर उसने लिटिल जान को इशारे से अपने पास बुलाया और उसके कान में कुछ कहा। लिटिल जान पास ही एक गुफा में गया और अन्दर से एक थैली निकाल लाया। उस थैली में से राबिनहुड ने एक थैली निकाली और सर रिचर्ड के हाथ में रखते हुए कहा, "लीजिए, इस थैली में छः हज़ार रुपये हैं, इनसे आप बिशप का कर्ज़ा चुका दीजिए।"

सर रिचर्ड बहुत खुश हुए। उनकी आंखों में आनन्द के आंसू आ गए। वे बोले, "राबिनहुड, मैं तुम्हारा यह उपकार कभी नहीं भूल सकूंगा। मैं तुम्हारा बड़ा आभारी हूं।"

राबिनहुड बोला, "सर रिचर्ड, आपको आभार मानने की कोई ज़रूरत नहीं। यह समझिए कि आपने दूसरी जगह से रुपया लेकर हरफोर्ड के बिशप का कर्ज़ा चुकाया है। बस, फर्क इतना ही है कि हम आपसे रुपये का तकाज़ा नहीं करेंगे। एक साल बाद हम इसी जगह आपका इन्तज़ार करेंगे। अगर हो सके तो तब आप रुपया लौटा दीजिएगा।"

सर रिचर्ड राज़ी हो गए। फिर राबिनहुड ने उसे पहनने के लिए अच्छे कपड़े और एक घोड़ा दिया; और उसका एक साथी सर रिचर्ड को पहुंचाने के लिए जंगल की आखिरी सीमा तक गया।

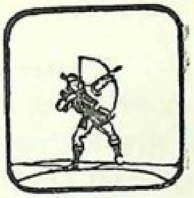

10

एक दिन आर्थर कहीं से खबर लाया कि हरफोर्ड का विशप जंगल के पास से गुज़रने वाला है । उसकी बात सुनकर राबिनहुड और उसके साथी खुशी से नाच उठे । ऐसा मौका भला उन्हें कब मिलता ? कई दिनों से वे हरफोर्ड के पादरी को उसकी करनी का फल चखाना चाहते थे ।

राबिनहुड और उसके साथियों ने गड़रियों का भेस बनाया । जिस रास्ते से पादरी निकलने वाला था, उस पर उन्होंने आग जलाकर एक हिरन को मारकर उसका मांस भूनना शुरू किया । थोड़ी देर बाद पादरी उधर से निकला । वह घोड़े पर बैठा था । उसके पीछे-पीछे उसके दस सिपाही भी चल रहे थे । पादरी ने देखा कि कुछ गड़रिये सड़क के किनारे बैठकर हिरन का मांस भून रहे हैं । उसने उन्हें डांटते हुए कहा, "क्यों जी, तुम लोग कौन हो ?"

राबिनहुड के साथियों में से एक ने कहा, "तुम्हें मतलब ? तुम अपने रास्ते क्यों नहीं जाते ?"

फौरन पादरी का एक सिपाही अपने घोड़े को आगे बढ़ाकर बोला, "चुप रहो ! जानते नहीं, मेरे मालिक हरफोर्ड के विशप हैं ! उनसे तुम इस तरह बातें करते हो ?"

"ओ हो, हमारा बड़ा सौभाग्य है ! इतने बड़े पादरी साहब के आज हमें दर्शन मिल रहे हैं ! लेकिन पादरी साहब, आप हम गरीबों को क्यों सताना चाहते हैं ?"

पादरी ने गुस्से में चीखकर कहा, "चुप रहो ! मैं अभी तुम्हें तुम्हारी करनी का फल चखाता हूं । सिपाहियो, इन सबको पकड़ लो !"

सिपाही उनकी ओर आगे बढ़े । लेकिन वे लोग पास आएं, इसके पहले ही एक पेड़ के नीचे से तुरही बजने की आवाज़ आई और चालीस-पचास हथियारबन्द आदमी पादरी और उसके साथियों को घेरकर खड़े हो गए । पादरी फौरन समझ गया कि वह आज राबिनहुड और उसके साथियों के चंगुल में आ फंसा है । वह मारे डर के कांपने लगा ।

राबिनहुड हंसते-हंसते बोला, "पादरी साहब, डरिए नहीं । आज यहां आपकी दावत होगी ।" वैसे भी खाना बनते देखकर पादरी के मुंह में पानी आने लगा था । राबिनहुड उसे खींचकर एक तरफ ले गया और आराम से एक पत्थर पर बिठाकर बोला, "पादरी साहब, बहुत दिनों से आपका स्वागत करने की इच्छा थी । आज मौका मिला है । लीजिए, भोजन कीजिए ।"

इसके बाद पादरी को भरपेट खाना खिलाया गया । खाने-पीने के बाद पादरी ने कहा, "राबिनहुड, खाना तुमने बहुत अच्छा खिलाया । प्रभु ईसामसीह तुम्हारा भला करें । अब मैं चलता हूं ।"

राबिनहुड बोला, "अच्छी बात है पादरी साहब, लेकिन हम लोग गरीब आदमी हैं । आपने जो खाना खाया है, उसका दाम देते जाइए ।"

"पर रुपये तो मेरे पास हैं नहीं । मैं तुम्हें दाम कहां से दे सकता हूं ?"

"ऐसा कैसे हो सकता है ? आपके पास इस थैली में क्या है ? ज़रा देखूं, निकालिए तो ।" यह कहकर राबिनहुड ने उससे थैली छीन ली ।

पादरी उसी दिन सर रिचर्ड से अपना छः हज़ार रुपया वसूल करके लाया था । उसकी थैली में वही रुपया था । राबिनहुड बोला, "यह तो बड़ा अच्छा हुआ, मुझे इस समय छः हज़ार रुपयों की ही ज़रूरत थी । आप लोग तो यह शिक्षा देते ही हैं कि दूसरों की मदद करना हमारा कर्त्तव्य है । मेरा एक मित्र इस

समय संकट में फंसा है। उसने एक पादरी से छः हज़ार रुपया उधार लिया था। अब वह पादरी उसे धमकी दे रहा है कि अगर रुपया नहीं दोगे तो तुम्हारी ज़मीन-जायदाद जब्त करा दूंगा।

आपके इन रुपयों से मैं अपने उसी मित्र की मदद करना चाहता हूं।''

इसके बाद पादरी के सिपाहियों को वहां से मारकर भगा दिया गया। फिर लिटिल जान ने पादरी को उल्टे-मुंह घोड़े की पीठ पर बांध दिया और घोड़े को चाबुक मारकर नौटिंगहम के रास्ते पर छोड़ दिया। घोड़ा गिरता-पड़ता पादरी को शहर ले गया।

कुछ दिन बाद पादरी ने इस अपमान का बदला लेने की तैयारी की। एक दिन पादरी अपने कई सिपाहियों को लेकर राबिनहुड की खोज में जंगल की तरफ चला। उस समय राबिनहुड किसी काम से अकेला जा रहा था। पादरी ने अचानक उस पर हमला कर दिया। चारों तरफ से लोगों को घेरा बांधकर अपनी तरफ आते देखकर राबिनहुड एक क्षण के लिए चौंका और फिर तेज़ी से घोड़ा दौड़ता हुआ वहां से भाग निकला। पादरी भी उसका पीछा करने लगा।

राबिनहुड घोड़ा दौड़ाता हुआ कुछ आगे निकल गया। कुछ ही दूरी पर एक विधवा बुढ़िया की झोंपड़ी थी। वह वहीं जा पहुंचा। अन्दर बुढ़िया अपना चर्खा चला रही थी। राबिनहुड की आवाज़ सुनकर उसने दरवाज़ा खोल दिया।

राबिनहुड बोला, ''दादी, पादरी अपने सिपाहियों को लेकर मेरा पीछा कर रहा है, इस समय मैं अकेला हूं। मेरे साथी यहां से बहुत दूर होंगे। मैं अगर तुरही बजाऊंगा तो भी उनके आने से पहले पादरी के सिपाही मुझ पर हमला कर देंगे। इसलिए तुम मुझे कहीं छिपा दो!''

बुढ़िया बोली, ''यहां आसपास छिपने की तो कोई जगह नहीं है। लेकिन एक रास्ता निकल सकता है। तुम मेरे कपड़े पहन लो और मैं तुम्हारे पहनती हूं। पादरी के सिपाहियों के लिए पहचान पाना मुश्किल होगा।''

राबिनहुड ने बुढ़िया के कपड़े पहन लिए। फिर वह उस

भेस बनाए बैठी थी, वहां तक जाने की किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी। सब दूर से ही आवाज़ देने और लाठी पटकने के साथ-साथ एक-दूसरे को आगे बढ़ने की हिम्मत बंधाने लगे। वे सब राबिनहुड के तीर से डरते थे।

अन्त में एक सिपाही ने हिम्मत बांधी और अन्दर झांककर कहा, "हमने तो सुना था कि राबिनहुड बड़ा बहादुर है, लेकिन तुम तो औरतों की तरह कोने में छिपे बैठे हो। अगर हिम्मत है तो बाहर क्यों नहीं आते ?"

लेकिन इस बीच वह बुढ़िया भी धीरे से बाहर निकल आई थी। बाहर सिपाहियों की नज़र बचाकर राबिनहुड अपने कपड़े उससे वापस लेकर वहां से चलता बना था। बुढ़िया ने फिर से अपने कपड़े पहन लिए और फिर झोंपड़ी के सामने आ खड़ी हुई। उसने सिपाहियों को डांटकर कहा, "तुम लोगों ने मेरे दरवाज़े तोड़ डाले, तुम्हारा सत्यानाश हो!" इस तरह वह सिपाहियों को गालियां देने लगी।

पादरी ने बुढ़िया को डांटकर कहा, "बुढ़िया, तू चुप रह, वरना हम लोग तुझे भी पकड़ ले जाएंगे। आज राबिनहुड यहां से बचकर नहीं जा सकता।"

लेकिन इतने में ही आसपास के पेड़ों से कोई तीस-चालीस हथियारबन्द आदमी निकल आए। उन्होंने पादरी के सिपाहियों को घेर लिया। पादरी ने उन्हें ललकारते हुए कहा, "खबरदार! तुम्हारा सरदार इस झोंपड़ी में फंसा हुआ है। अगर तुम लोग एक कदम भी आगे बढ़े तो हम झोंपड़ी में आग लगा देंगे और राबिनहुड इसी में जलकर खाक हो जाएगा।"

लेकिन तभी पादरी का एक सिपाही झोंपड़ी से बाहर आया और बोला, "हुज़ूर, अन्दर तो कोई नहीं है। झोंपड़ी तो खाली पड़ी है।"

पादरी यह सुनकर बहुत नाराज़ हुआ और सिपाहियों को डांटकर बोला, "अरे, उस लुटेरे से तुम लोग इस तरह डरते

हो ! जाओ, उसे फौरन बांध लो।"

लेकिन इतने में राबिनहुड एक पेड़ के पीछे से निकलकर पादरी के सामने आ खड़ा हुआ। मारे घबराहट के पादरी की घिग्घी बंध गई। राबिनहुड बोला, "पादरी साहब, आपको इस गरीब बुढ़िया की झोंपड़ी में आग लगाने की कोई ज़रूरत नहीं। मैं तो आपके सामने खड़ा हूं। पकड़ लीजिए।"

पादरी ने एक बार राबिनहुड की तरफ देखा और फिर आस-पास खड़े हुए उसके साथियों की ओर देखा और अपनी गरदन झुका दी। इस जंगल में इतने-से सिपाहियों को लेकर राबिनहुड के सिपाहियों से लड़ाई मोल लेना जैसे अपनी मौत को बुलाना था।

राबिनहुड के साथियों ने पादरी के सिपाहियों के सारे हथियार छीन लिए। पादरी अपने साथ बहुत-सा धन लाया था। वह भी छीन लिया गया। फिर पादरी और उसके साथियों को जंगल के बाहर खदेड़ दिया गया।

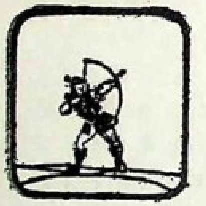

11

अब कोतवाल ने समझ लिया कि राबिनहुड को पकड़ पाना उसके लिए संभव नहीं है। पादरी ने भी फिर कभी राबिनहुड को छेड़ने की हिम्मत नहीं की। अन्त में मजबूर होकर कोतवाल लंदन गया। उसने राजकुमार जान से फरियाद की, "हुज़ूर, राबिनहुड कोई साधारण लुटेरा नहीं है। उसके साथ उसके तीस-चालीस हथियारबन्द आदमी बराबर रहते हैं। उस पकड़ने के लिए एक बड़ी फौज की ज़रूरत है।"

लेकिन राजकुमार ने कोतवाल को डांटते हुए कहा, "यह तुम कैसी बात करते हो ! तुम नोटिंगहम के कोतवाल हो और तुम्हारा फर्ज़ है कि अपने इलाके में कोई गड़बड़ी न होने दो। जिस तरह भी हो, तुम्हें लुटेरों और डाकुओं को गिरफ्तार करना चाहिए।"

कोतवाल अपना-सा मुंह लेकर वहां से लौट आया। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या करे।

अन्त में बहुत सोचने-विचारने के बाद उसे एक चाल सूझी। राबिनहुड और उसके साथी दंगल के बड़े शौकीन थे और करीब-करीब हर दंगल में भाग लेते थे। इसलिए उसने डुग्गी पिटवाकर शहर में ऐलान करा दिया कि अगले हफ्ते नोटिंगहम में एक दंगल होगा और जो जीतेगा, उसे सोने का एक तीर इनाम दिया जाएगा।

यह बात राबिनहुड और उसके साथियों तक जा पहुंची। उन्होंने तय किया कि इस दंगल में हमें भाग लेना चाहिए।

जिस दिन दंगल शुरू होने वाला था, उस दिन राबिनहुड और उसके साथियों ने अलग-अलग भेस बनाया और अपने चेहरे

रंगे। अब देखने में वे एक-दूसरे तक को नहीं पहचान पाते थे। पूरी तैयारी करके राबिनहुड का दल नोटिंगहम को चल पड़ा।

इस बार कोतवाल बहुत सावधान हो गया था। उसने आस-पास से बहुत-से सिपाही शहर में बुला लिए थे। जगह-जगह पहरा बैठा था। सिपाही अक्सर राह चलने वालों को रोककर

पूछताछ करते थे। लेकिन दंगल देखने के लिए शहर में हज़ारों आदमियों की भीड़ आ रही थी। उनमें राबिनहुड और उसके साथियों को पहचान पाना असंभव था।

किसी तरह वे लोग शहर में दाखिल हो गए। दंगल शुरू हुआ। राबिनहुड ने भी उसमें भाग लिया। वह हर खेल में जीतने लगा। इसलिए लोगों को उस पर शक होने लगा। कोतवाल ने सोचा कि इतना सच्चा निशानेबाज़ तो इंग्लैंड में सिर्फ एक ही है, और वह है राबिनहुड। उसने फौरन अपने सिपाहियों को इशारा किया।

दंगल खत्म होने पर राबिनहुड सोने का तीर इनाम में लेने के लिए कोतवाल के सामने आ खड़ा हुआ। उसने सलाम करके तीर ले लिया। जब वह लौटकर जाने लगा तो कोतवाल ने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया, "पकड़ लो इस लुटेरे को।"

लेकिन कोतवाल अपनी बात पूरी नहीं कर पाया था कि इतने में एक ज़ोर का तमाचा उसके मुंह पर पड़ा। कोतवाल के पैर लड़खड़ा गए। थोड़ी देर तक तो वह समझ ही नहीं सका कि यह क्या हुआ। लिटिल जान कोतवाल के पास ही खड़ा था। उसीने कोतवाल को एक तमाचा मारा था। उसे देखकर कोतवाल का खून खौल उठा। वह उसकी ओर झपटा, लेकिन अभी राबिनहुड के एक दूसरे साथी ने उसे घूंसा मारा। कोतवाल को बचाने के लिए उसके सिपाही दौड़ पड़े। देखते-देखते वहां लड़ाई छिड़ गई।

तमाशा देखने वाले भी दोनों ओर से लड़ाई में भाग लेने लगे। इसी बीच राबिनहुड ने तुरही बजाकर अपने साथियों को वहां से भाग निकलने का इशारा किया। मैदान के दरवाज़े पर दो सिपाही रास्ता रोके खड़े थे। लेकिन दूसरे ही क्षण वे दोनों तीर खाकर ज़मीन पर लेट गए। राबिनहुड और उसके साथी वहां से भाग निकले।

कोतवाल के सिपाही उनका पीछा करने लगे। वे बराबर

तीर चला रहे थे। एक तीर आकर जान के पैर में लगा। वह लड़खड़ाकर घोड़े से गिर पड़ा। राबिनहुड ने फौरन उसे उठाकर अपने घोड़े पर डाल लिया और तेज़ी से घोड़ा दौड़ाता हुआ वहां से दूर निकल गया।

किसी तरह बचकर सभी लोग भाग आए। राबिनहुड और उसके साथी जंगल में पहुंच गए। मेरियन घायलों की सेवा करने लगी। यहां से कुछ दूर पर टक नाम का एक फकीर रहता था। वह राबिनहुड का मित्र था। फौरन उसे बुलाया गया। उसने लिटिल जान की मरहम-पट्टी की और उसे होश में लाने की कोशिश की। सब लोग तो आ गए थे, लेकिन विल स्टटली नहीं दिखाई दे रहा था। पता नहीं, वह कहां रह गया था!

उधर कोतवाल खुशियां मना रहा था।

इतने में एक चमकीली चीज़ उसकी टेबल पर आ गिरी। यह वही सोने का तीर था जो उसने राबिनहुड को इनाम में दिया था। तीर में एक पर्चा बंधा था, जिसमें लिखा था, "तुम्हारे-जैसे धोखेबाज़ आदमी से राबिनहुड इनाम नहीं लेता। इसके अलावा ऐसे आदमियों को वह माफ भी नहीं करता। अब तुम्हारी मौत नज़दीक आ गई है, होशियार रहो!"

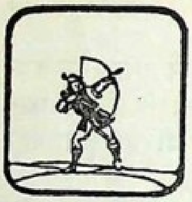

12

विल स्टटली को कोतवाल के सिपाहियों ने पकड़ लिया था। कोतवाल बहुत खुश था कि उसने राबिनहुड के एक साथी को पकड़ लिया। दूसरे दिन स्टटली को फांसी पर चढ़ाने की तैयारी हुई। शहर में बड़ा कड़ा पहरा बिठाया गया। लोगों को घूमने-फिरने से मना कर दिया गया।

राबिनहुड के साथी भी चुप नहीं बैठे थे। नगर के पूर्वी दरवाज़े के पास राबिनहुड ने अपने साथियों को इकट्ठा किया और कहा, "हम लोगों को कुछ देर तक तो जंगल में ही छिपे रहना पड़ेगा। हममें से कोई एक आदमी अन्दर जाएगा। पहले वह अन्दर से खबर ले आए, तब फिर दरवाज़ा खुलवाने की कोशिश की जाए। बिना दरवाज़ा खुले तो अन्दर घुसना मुश्किल ही है।"

इतने में कुछ दूर पर एक जवान पादरी आता हुआ दिखाई दिया। उसे आते देखकर राबिनहुड उसके पास गया और पूछने लगा, "कहिए पादरी साहब, शहर के क्या हाल-चाल हैं? सुना है, आज किसी लुटेरे को फांसी पर चढ़ाया जाने वाला है?"

"हां, मैंने भी सुना तो है कि विल स्टटली नामक एक डाकू को आज बारह बजे फांसी पर लटकाया जाएगा।"

"तो फिर पादरी साहब, ऐसे मौके पर आप कहां जा रहे हैं? फांसी के समय उसे भगवान का नाम कौन याद दिलाएगा और उसकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना कौन करेगा?"

पादरी बोला, "लेकिन अब तो अन्दर जाना सम्भव नहीं है। सारे दरवाज़े बन्द हैं। और फिर मैं एक छोटा पादरी हूं। मुझे तो पहरेदार किसी हालत में अन्दर नहीं जाने देंगे।"

पादरी को जैसे कुछ-कुछ शक होने लगा था कि यह राबिनहुड ही है और अपने साथी को छुड़ाने की तरकीब कर रहा है। उसने कहा, "इधर के दरवाज़े पर तो बहुत कड़ा पहरा है, लेकिन उत्तर के दरवाज़े के पास इतना कड़ा पहरा नहीं है। इसके अलावा, वहां पास ही एक टीला भी है, जिसे पार करके अन्दर जाया जा सकता है।" यह कहकर पादरी वहां से चला गया।

राबिनहुड अपने साथियों को लेकर उत्तरी दरवाज़े के पास पहुंचा। आर्थर आगे बढ़ा। दरवाज़े के आगे एक बड़ी खाई थी, लेकिन उसमें पानी करीब-करीब सूख चुका था। आर्थर आसानी से उसे पार करके दरवाज़े के पास जा पहुंचा। दरवाज़े पर एक बेल चढ़ी हुई थी। उसीको पकड़कर वह ऊपर चढ़ गया और अन्दर जा पहुंचा। अन्दर एक पहरेदार खड़ा था।

आर्थर ने पीछे से जाकर उसका गला दबोच दिया और उसे इस तरह खींचता हुआ दरवाज़े के पास की एक कोठरी में ले गया कि पहरेदार चिल्ला भी न सका। आर्थर ने उसके मुंह में कपड़ा ठूंसकर उसके हाथ-पैर बांध दिए। फिर उसने उसकी वर्दी उतार कर खुद पहन ली। वर्दी पहनकर वह फौरन दरवाज़े को खोलने का इन्तज़ाम करने लगा। दरवाज़े के खुलते ही राबिनहुड अपने साथियों को लेकर अन्दर घुस गया। सब एक जगह छिपकर यह तय करने लगे कि अब आगे क्या किया जाए।

इधर स्टटली को फांसी पर चढ़ाने की तैयारी हो रही थी। पहले तो उसने सोचा कि उसका मित्र राबिनहुड ज़रूर उसे बचाने आएगा; लेकिन देर होते देखकर वह आशा छोड़ने लगा। इतने में एक पादरी पास आकर कोतवाल से बोला, "हुज़ूर, इस गरीब को मरना ही है तो अगर आप इजाज़त दें तो ज़रा मैं इसे ईश्वर की याद दिला दूं। इस तरह मरने पर इसकी आत्मा को शान्ति मिलेगी।"

हरफोर्ड का पादरी वहीं कोतवाल के पास खड़ा था। वह नाराज़ होकर बोला, "नहीं-नहीं, ऐसे पापी को ईश्वर का नाम

सुनाने की क्या ज़रूरत?" लेकिन कोतवाल ने उस युवक पादरी को विल के पास जाने और थोड़ी देर तक उपदेश देने की इजाज़त दे दी।

पादरी विल के पास जाकर उसके कान में बोला, "विल, घबराओ मत; फौरन लड़ने के लिए तैयार हो जाओ।" यह पादरी और कोई नहीं, राबिनहुड का ही एक साथी था। उसने देखते-देखते विल के सारे बंधन खोल डाले।

यह देखकर कोतवाल चिल्लाया, "अरे, यह क्या? पकड़ो इस बदमाश को।"

कोतवाल के सिपाही पहले तो कुछ नहीं समझ पाए, फिर जब उन्होंने राबिनहुड के साथियों को कोतवाल पर हमला करते देखा तो वह भी उन पर टूट पड़े। लेकिन इस बीच राबिनहुड ने अपनी तुरही बजा दी। सिपाहियों पर तीरों की वर्षा होने लगी। इस अचानक हमले से सिपाही घबराकर भागने लगे, लेकिन इतने पर भी राबिनहुड के साथियों को विजय नहीं मिली, क्योंकि सिपाहियों ने दरवाज़े के पास इकठ्ठे होकर उनका रास्ता रोक लिया। राबिनहुड के साथी भागकर दक्षिणी दरवाज़े की ओर पहुंचे। वह खुला था और वहां पहरेदारों की कमी थी। थोड़ी-सी लड़ाई के बाद उन्हें दरवाज़ा पार करने में सफलता मिल गई।

यह दरवाज़ा शेरउड के जंगल की तरफ ही पड़ता था, लेकिन इसमें एक दिक्कत यह थी कि सामने ही पहाड़ पड़ता था, जिसे पार किए बिना जंगल में जाना संभव नहीं था। बुर्ज पर से सिपाही उनपर तीर चलाने लगे। बड़ी मुश्किल से वे लोग अपनी जान बचा सके और भागकर जंगल में पहुंचे।

रास्ते में राबिनहुड के हाथ में चोट आ गई। घाव से खून बहते देखकर जवान पादरी ने फौरन अपना रूमाल निकालकर घाव पर बांध दिया। यह देखकर राबिनहुड चौंका। इस रूमाल को वह पहचानता था। यह मेरियन का रूमाल था। वह बोला, "मेरियन!"

मुंह लेकर वापस लौट आया।

सर रिचर्ड ने राबिनहुड से कहा, "भाई राबिन, तुमने मुझपर जो उपकार किया था, आज मैंने उसका बदला चुका दिया।"

"कैसा उपकार सरदार साहब ? मुझे तो पहले ही उसका बदला मिल गया।"

"वह किस तरह ?"

"आपके जाते ही हरफोर्ड का पादरी सारा रुपया लौटा गया।" फिर राबिनहुड ने सर रिचर्ड को पूरा किस्सा बताया कि किस तरह उसके साथियों ने पादरी को घेरकर उससे रुपया छीन लिया था।

राबिनहुड और उसके साथियों को सर रिचर्ड ने कई दिनों तक साथ रखा और खूब खिलाया-पिलाया।

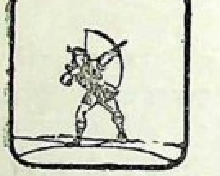

13

उधर लड़ाई में घायल होकर लिटिल जान पादरी टक के यहां पड़ा रहा। धीरे-धीरे जब वह ठीक हो गया, तो एक दिन पादरी खुद उसे राबिनहुड के पास पहुंचा आया। जब वह उसे पहुंचाकर लौटा तो काफी रात हो गई थी। आकर वह अपनी झोंपड़ी का दरवाज़ा बन्द करके सोने की तैयारी करने लगा।

इतने में थोड़ी देर बाद ही किसीने दरवाज़ा खटखटाया। पादरी ने दरवाज़ा खोला। बाहर एक हथियारबन्द सैनिक खड़ा था। पास ही उस सैनिक का काले रंग का घोड़ा भी खड़ा था। पादरी को देखकर सैनिक ने कहा, "पादरी साहब, क्या आज मुझे यहां रात काटने की जगह मिल सकती है ?"

पादरी ने पहले तो इन्कार किया, पर बहुत कहने-सुनने पर अन्त में मजबूर-सा होकर उसने उसे खाना भी खिलाया और सोने के लिए जगह भी दे दी।

सुबह बहुत जल्दी ही वह सैनिक तैयार हो गया और पादरी को जगाकर बोला, "पादरी साहब, आप राबिनहुड को जानते हैं ? मैं उसके नाम महाराज का एक संदेश लेकर आया हूं।"

पादरी बोला, "सरदार साहब, मैं तो एक सीधा-सादा पादरी हूं, भला मैं इन लुटेरों के बारे में क्या जानूं !"

बहुत समझाने-बुझाने के बाद पादरी उस सैनिक को राबिनहुड का पता बताने के लिए राज़ी हुआ। दोनों साथ-साथ जंगल की तरफ चल पड़े। कुछ दूर जाने पर एक आदमी लपककर झाड़ी के बाहर आया और उस सैनिक का घोड़ा रोककर खड़ा हो गया। सैनिक ने उससे पूछा, "तुम कौन हो ?"

"मैं कोई भी हूं, इससे तुम्हें क्या लेना-देना ? लेकिन इस

रास्ते पर तुम आगे नहीं जा सकते ।"

पादरी ने पहचान लिया था कि वह राबिनहुड ही था । इसलिए वह चुपचाप खड़ा रहा । सैनिक ने कहा, "मैं महाराज का दूत हूं और राबिनहुड के नाम उनका एक संदेश लेकर आया हूं ।"

यह सुनकर, राबिनहुड ने उसके घोड़े की लगाम छोड़ दी और कहा, "ईश्वर हमारे महाराज का कल्याण करे ! मैं खुद राबिनहुड हूं । आइए, आप हमारे मेहमान हैं ।" सैनिक उसके साथ-साथ चला गया । राबिनहुड ने उसके खाने-पीने का इन्तजाम कर दिया और राबिनहुड के साथी उसे अपने-अपने करतब दिखाने लगे । इतने में सर रिचर्ड अपने कुछ साथियों को लेकर वहां आ पहुंचे । आते ही उन्होंने सिर झुकाकर उस सैनिक को सलाम किया और कहा, "महाराज, मेरे योग्य कोई सेवा बताइए ।"

सर रिचर्ड को उस सैनिक से इस तरह बात करते देखकर राबिनहुड और उसके साथी चौंक पड़े । वह सैनिक और कोई नहीं, खुद इंग्लैंड के सम्राट थे । राबिनहुड के साथी सम्राट के सम्मान में सिर झुकाकर खड़े हो गए और जय-जयकार करने लगे ।

राबिनहुड ने कहा, "महाराज, मैंने और मेरे साथियों ने बहुत-से अपराध किए हैं, लेकिन हम लोग आपसे प्रार्थना करते हैं कि हमें इस बार क्षमा कर दिया जाए । इसके बाद हम जब तक जीवित रहेंगे, महाराज की सेवा करते रहेंगे । असल में हम लोग अन्याय का बदला लेने के लिए ही लुटेरे बने थे और जंगल में रहते थे । अगर आप हमें क्षमा कर देंगे, तो हम लोग जंगल छोड़कर आपकी सेवा करने लगेंगे ।"

सम्राट ने कहा, "राबिनहुड, मैं तुम्हारी और तुम्हारे साथियों की बहादुरी देखकर बहुत खुश हुआ हूं । यह ठीक है कि अन्याय का विरोध करने के लिए तुमने यह सब किया, लेकिन

इस तरह तुम्हें कानून को अपने हाथ में नहीं लेना चाहिए। खैर, मुझे आशा है कि तुम और तुम्हारे दूसरे साथी अब आगे से राज्य की सेवा को ही अपने जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य समझोगे। मैं तुम सब लोगों को क्षमा करता हूं। तुम लोगों जैसे बहादुरों और पक्के निशानेबाज़ों को जेल में बन्द करना कोई बुद्धिमानी की बात नहीं होगी। मैं लिटिल जान को नोटिंगहम शहर का कोतवाल बनाता हूं और विल को अपने दरबार में सरदार का खिताब देता हूं। इसके पिता मेरे दूर के रिश्तेदार थे। स्टटली को मैं अपने तीरन्दाज़ों का सरदार बना दूंगा।"

इसके बाद सम्राट ने मेरियन का हाथ राबिनहुड के हाथ में देते हुए कहा :

"मैं जानता हूं कि तुम दोनों एक-दूसरे को प्यार करते हो। अच्छे काम में देर क्या! आओ, मैं इस जंगल में ही तुम दोनों का विवाह करा देता हूं। पादरी साहब कहां गए? आइए, पादरी साहब, हमारे देश के मशहूर तीरन्दाज़ राबिनहुड का विवाह इस बहादुर लड़की मेरियन से कर दीजिए।"

पादरी ने वहीं दोनों का विवाह कर दिया।

राबिनहुड के साथी खुशी में नाचने लगे।

○ ○ ○

परि० सं० ... 4416
पु० सं० ... 3.34

मुद्रक : सोहन प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली

5812